अप्रैल-2015 ◆ वर्ष 3 ◆ अंक 11 ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

अप्रैल-२०१५

क्या रचना क्या रवानी है
अद्भुत सुन्दर प्राणी है
नहीं कोई भी सानी है
प्रभु की मेहरबानी है
दया-कृपा का वह भण्डार
सत्यार्थप्रकाश की वाणी है

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ १० ४०

भारत
के व्यंजनों का आधार,
है, एम.डी.एच. मसालों से प्यार।
MDH
मसाले
असली मसाले
सच - सच
Sambhar masala
Garam masala
DEGGI MIRCH
Chunky Chat masala
Chana masala
Kitchen King
Pav Bhaji masala
Peacock Kasoori Methi
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
ESTD. 1919
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली–110015 Website : www.mdhspices.com

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक

सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग ◆ भारत	विदेश
संरक्षक - ११००० रु.	$ 1000
आजीवन - १००० रु.	$ 250
पंचवर्षीय - ४०० रु.	$ 100
वार्षिक - १०० रु.	$ 25
एक प्रति - १० रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें।
अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया
मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर
खाता संख्या : ३१०१०२०१००४१५१८
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३११६
वैशाख कृष्ण तृतीया
विक्रम संवत्
२०७२
दयानन्दाब्द
१९१

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

April- 2015

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर २ व ३ (भीतरी आवरण) रंगीन ३५०० रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	२००० रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	१००० रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	७५० रु.

समाचार २७

हलचल २८

०४ वेद सुधा
०८ पहली अप्रैल का दिन
०६ संस्कारविहीन शिक्षा बढ़ते अपराध
१४ विश्व संगठन के वैदिक आधार
१६ नारी को बराबरी का अधिकार दें
१८ सत्यार्थप्रकाश पहेली-१५
१९ वेदों का एक ही सिद्धान्त
२१ भय बिन प्रीति न होय गोपाला
२२ शृंगवेर से जिंजर तक
२३ दिन को सुदिन कैसे बनावें?
२६ स्वास्थ्य- इम्यूनोथेरेपी
२६ वानप्रस्थाश्रम के कर्त्तव्य
३० कथा सरित

स्वामी: श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ३ अंक - ११

मुद्रण: द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१
(०२९४) २४१७६६४, ०९३१४५३५३७६, ०९८२९०६३११०
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

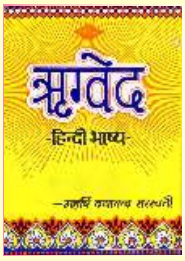

ओ३म्

वेद सुधा

श्रद्धा का महत्व

श्रद्धयाग्निः समिध्यते श्रद्धया हूयते हविः।
श्रद्धां भगस्य मूर्धनि वचसा वेदयामसि।। - ऋग्वेद १०/१५१/१

धारणा के द्वारा जाने हुए सत्यस्वरूप को धारण करना ही श्रद्धा है। श्रद्धा का अस्तित्व विज्ञानमयकोश में प्रधानता से विद्यमान रहता है। श्रद्धा योगी को माता के समान पालती है। धारणा एवं धारणा से आगे की साधना मुख्यरूपेण श्रद्धा पर अवलम्बित है। श्रद्धा के आश्रय से योगाभ्यासी विशेषरूपेण साधना-पथ पर अग्रसर होता है। श्रद्धा ही आस्तिक भाव की जननी है, अतः वेद-सम्मत श्रद्धा की साधना में उपयोगिता का निरूपण करना यहाँ प्रासंगिक है। तैत्तिरीय-उपनिषद् के प्रमाण से श्रद्धा विज्ञानमयकोश का अंग है।

'सत्य को धारण करनेवाली क्रियासहित श्रद्धा के द्वारा योगाभिलाषी अपने अन्तःकरण में प्राणाग्नि को प्रदीप्त करता है, श्रद्धा के वशीभूत ईश्वरप्रणिधान के पालन में साधक आत्मरूपी हवि को समर्पित करता है।

ऐश्वर्यस्य समग्रस्य धर्मस्य यशसः श्रियः।
ज्ञान-वैराग्ययोश्चैव षण्णां भग इतीरणा।।

भग अर्थात् सम्पूर्ण ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, ज्ञान, वैराग्य आदि की प्राप्ति में यह श्रद्धा मूर्धास्थानीय है। श्रद्धा बुद्धिगत है, साधक वाणी से उसकी श्रेष्ठता प्रकाशित करता है।

श्रद्धां देवा यजमाना वायुगोपा उपासते।
श्रद्धां हृदय्य याकूत्या श्रद्धया विन्दते वसु।। - ऋग्वेद १०/१५१/४

'योगयज्ञ करनेवाले विद्वान्, प्राणवायु से रक्षित श्रद्धा का उपसेवन करते हैं तथा सभी साधक हृदय में होने वाले संकल्प-भाव से श्रद्धा का सेवन करते हैं। श्रद्धावान्, श्रद्धा के द्वारा मोक्षधन को प्राप्त करते हैं।

कश्यपः पश्यको भवति, यत् सर्वं पश्यतीति। - तै.आ. १/८/८

कश्यप की माता-श्रद्धा- सत्य, ब्रह्मचर्य, तप, उपासना आदि परमधर्म के पालन से परमात्माग्नि प्रकट होता है, उसके साथ स्वाभाविक शक्तियाँ भी होती हैं। तब उपासक 'कश्यप' संज्ञावाला हो जाता है।

साधना की उच्च स्थितिवाले 'कश्यप' साधक का अग्नि-स्वरूप परमात्मा पिता, श्रद्धा माता तथा मन उसका उपदेष्टा गुरुपदवी को पाकर उसकी रक्षा करते हैं।

श्रद्धा इत्ते मघवन्पार्ये दिवि वाजी वाजं सिषासति। - ऋग्वेद ७/३२/१४; साम. २८०/१६८२

श्रद्धा से आत्मिक बल की वृद्धि- सामवेदीय ऋचा में प्रतिपादित है कि 'ज्ञान प्रकाश से परमात्मा के प्रति उत्पन्न हुई श्रद्धा साधक को आत्मबल प्रदान कर सकती है, क्योंकि सब प्रकार के बलों का स्वामी वही परमात्मा है।'

आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः। - सामवेद १३७६
सत्यं च मे श्रद्धा च मे। - यजु. १८/५

श्रद्धाहीन उपासक सत्त्व, रजस् तथा तमोगुणों की मिश्रित रंग-बिरंगी वृत्तियोंवाला होता है, परन्तु जब श्रद्धामाता की गोद में आसन जमाता है तथा परमात्मगुणों का स्तवन करता है, तब उपासना-मार्ग पर आगे-आगे बढ़ता है और सुखस्वरूप निश्चल परमात्मा की ओर निरन्तर प्रयाण करता रहता है।

यजुर्वेदीय मंत्र के अनुसार पदार्थ-यज्ञ के द्वारा तथा सत्य-धर्म की उन्नति करनेवाले उपदेश से जैसे सत्य एवं श्रद्धा आदि की भावना सुदृढ़ या समर्थ होती है, तद्वत् योगयज्ञ के द्वारा भी याथातथ्य जानकर उस पर श्रद्धा करने से साधक की साधना में सामर्थ्य-शक्ति का विकास होता है।' सामवेद के भाष्यकार पं. विश्वनाथ विद्यामार्तण्ड ने उपासकों की सेना में 'श्रद्धा' की गणना की है, जो उपासक की सर्वदा रक्षा करती है।

उपासकजन उक्त प्रकरणों में निरूपित श्रद्धा के महत्व को कल्याणकारिणी माता के समान उपादेय समझकर श्रद्धासूक्त के शब्दों में कहते हैं- 'हम उपासक प्रातःकाल श्रद्धा का आह्वान करते हैं, इसी प्रकार मध्याह्न तथा सूर्य की अस्तमन-वेला में

आह्वान करते हैं। साथ ही प्रार्थना करते हैं कि हे श्रद्धे! इस जीवन में हमें श्रद्धालु बनाये रखना।'

प्रश्नोपनिषद् में भरद्वाज के पुत्र सुकेशा नामक ऋषि ने प्रश्न किया सोलह कलाओं वाला पुरुष कहाँ है?

महर्षि पिप्पलाद ने उत्तर दिया कि- इस शरीर में षोडशकलापूर्ण पुरुष है, उसी में ये सोलह कलाएँ प्रकट होती हैं। महर्षि ने सोलह कलाओं की गणना में श्रद्धा को भी बताया है। इस प्रकार सोलह कलाओं से पूर्ण पुरुष=जीवात्मा और परमात्मा दोनों हैं। अखिल विश्व में सोलह कलाएँ परिपूर्ण हैं, जिनमें श्रद्धा का भी स्थान है।

छान्दोग्योपनिषद् में नारद व सनत्कुमार के ब्रह्मविद्या-विषयक संवाद में, नारद ने सनत्कुमार से कहा कि- 'भगवन्! मैं श्रद्धा को जानना चाहता हूँ, मुझे श्रद्धा का उपदेश दीजिए।'

सनत्कुमार ने उत्तर दिया कि- 'आत्मा में परमात्मा-रूप सत्य को धारण करने की जो रुचि है, जो आस्तिकभाव है, उसका नाम श्रद्धा है। निश्चय से जब मनुष्य सत्य में श्रद्धा करता है, तब सत्य को मानता है और असत्य में अश्रद्धा करता हुआ उसे नहीं मानता। श्रद्धा ही जानने की इच्छा करने योग्य है।

महर्षि पतंजलि ने असम्प्रज्ञात समाधि को दो प्रकार से प्रतिपादित किया है- १. भवप्रत्यय २. उपायप्रत्यय।

श्रद्धावीर्यस्मृतिसमाधिप्रज्ञापूर्वक इतरेषाम्। योगदर्शन १/२०

'श्रद्धा, वीर्य, स्मृति, समाधि तथा प्रजादि उपायों से होने वाले योगियों के चित्तवृत्ति-निरोध का नाम उपायप्रत्यय है'।

'असम्प्रज्ञात समाधि की आधारभूत श्रद्धा का विशद विवेचन करते हुए महर्षि व्यास ने श्रद्धा आदि उपायों को मुमुक्षु योगियों के लिए वर्णित किया है। चित्त का भलीभाँति प्रसादयुक्त होना ही 'श्रद्धा' का तात्पर्य एवं सूत्रकार का अभिमत है। श्रद्धा ही माता की भाँति कल्याणरूपा होती हुई योगी की रक्षा करती है। उससे श्रद्धावान् विवेकार्थी योगी का बल-उत्साह प्रकट होता है, उत्साह के कारण योगी की स्मृति=ध्यानशक्ति उत्पन्न होती है, इससे बिना बाधा के चित्त समाहित हो जाता है। समाहित चित्तवाले योगी का प्रज्ञाविवेक जागता है।

साधक-समाज के निमित्त श्रद्धा के समग्र स्वरूपों पर विचार-विमर्श प्रस्तुत कर, यहाँ यह भी अपेक्षित है कि श्रद्धा को किन उपायों अथवा साधनों से योगी अपने अन्दर प्रस्थापित करे? व्यासभाष्य में निरूपण किया गया है कि 'चित्तप्रसादन' ही श्रद्धा है।

- डॉ. योगेन्द्र पुरुषार्थी
(साभार- वेदों में योगविद्या)

नवलखा महल में नवनिर्मित ''आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा'' एवं सत्यार्थ प्रकाश स्तम्भ के बारे में दर्शकों के विचार

जय सत्यार्थप्रकाश। अद्भुत कृति।

अपने सभी साथियों के साथ नवलखा महल देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस महल में महापुरुषों, क्रान्तिकारियों, महानुभावों की जीवनियों का जीता जागता वृतान्त मालूम हुआ। हम सभी यह जानकर मन्त्रमुग्ध हुए कि हमारे देश में इतने प्रतापी राजा, प्रतापी सन्त, महात्मा, देशभक्त, क्रान्तिकारी हुए। वास्तव में यह एक अवलोकनीय कल्पना गागर में सागर है।

-दुले सिंह पण्ड्या, उज्जैन

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष - न्यास

निर्मल मन और श्रेष्ठ कर्म ही उन्नति के आधार, इनका साथ मिले तो होते सारे स्वप्न साकार

सत्यार्थ सौरभ घर-घर पहुँचावें

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश(म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

* न्यास द्वारा ONLINE TEST प्रारम्भ।
* वर्ष में तीन बार दिया जावेगा ५१०० रु. का उपरोक्त पुरस्कार।
* आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
* विश्व भर के लोगों से इस ONLINE TEST में भाग लेने का अनुरोध।

बेवसाइट - www.satyarthprakashnyas.org

आत्म निवेदन

एक करोड़ या एक गोली

बहुत पहले एक फिल्म आयी थी- प्रतिघात। एक पुलिस आफीसर की दिनदहाड़े सैंकड़ों लोगों के सामने गुण्डों के द्वारा हत्या कर दी गयी। कानून को गवाह चाहिए। गुण्डों के डर के कारण किसी ने गवाही नहीं दी। परन्तु नायिका ने गवाही दी। नतीजा यह हुआ कि भारी भीड़ के समक्ष नायिका को गुण्डों द्वारा निर्वस्त्र कर उसे अपमानित किया गया। आगे की कहानी इस आलेख के संदर्भ में अधिक प्रासंगिक नही है। वस्तुस्थिति यह है कि यह सिर्फ फिल्म की कहानी नही असल जिन्दगी में यही होता है। अपराधी बेखौफ क्यों हैं? उनके मन में कानून का इतना भी डर नहीं है कि अपराध छिप कर करें। बल्कि वे दिन दहाड़े इसलिए कत्ल आदि अपराध करते हैं ताकि देखने वालों के मन में डर बैठ जाय और वे खौफ के मारे गवाही देने आगे न आवें और सबूतों के अभाव में वे सजा से बच जावें।

ऐसा सिर्फ फिल्मों में होता हो ऐसा नहीं है वरन् वास्तविक घटनाओं से ही प्रेरित होकर ऐसी फिल्में बनीं हैं। यहाँ एक बहुचर्चित हत्याकाण्ड का जिक्र करना चाहेंगे। साल १९९९ में एक प्रसिद्ध फैशन डिजाइनर के क्लब में निश्चित समय के बाद शराब देने से मना करने पर शराब सर्व करने वाली एक फैशन डिजाइनर जेसिका लाल को एक प्रभावशाली नेता के बेटे ने सरे आम गोली मार दी। इस घटना के सैंकड़ों गवाह थे। पुलिस ने दर्जनों लोगों को गवाह बनाया। एक बॉलीवुड एक्टर ने न सिर्फ आरोपी को पहचाना वरन् पुलिस स्टेशन में FIR भी दर्ज करायी। यह एक ऐसा केस था जिसे open and shut कहा जाता है। सैकड़ों लोगों के सामने हत्या हुई। स्वाभाविक था कि आरोपी को आसानी से सजा हो जाती। पर ऐसा हुआ नहीं। दर्जनों गवाह कोर्ट में अपने बयानों से मुकर गए। सबसे महत्त्वपूर्ण गवाह वह एक्टर था जिसने FIR दर्ज कराई थी। उसने कोर्ट में कहा कि FIR में क्या लिखा था वह नहीं जानता क्योंकि वह हिन्दी नहीं जानता। पुलिस के अनुसार आरोपी ने एक ही पिस्तौल से दो गोलियाँ चलाई थीं पहली जेसिका को डराने के लिए तथा दूसरी से जेसिका की मौत हुई। कोर्ट में स्थिति बदल गयी। एक पिस्तौल की बजाय दो पिस्तौलों की बात कही गयी। फोरेंसिक विशेषज्ञों ने भी इसे सपोर्ट किया। एक्टर ने भी अपने बयान में परिवर्तन करते हुए कहा कि पहली गोली जो छत में लगी आरोपी ने चलाई परन्तु दूसरी गोली जिससे जेसिका मरी, किसने चलाई, वह नहीं जानता। इन सब गवाहों के बयान कैसे परिवर्तित हुए? तब 'एक करोड़ या एक गोली' का जुमला सामने आया। आरोपी का पिता ताकतवर नेता था तो एक और आरोपी का पिता बहुत बड़ा डॉन। लालच तथा भय ही वे बड़े कारण थे जिन्होंने गवाहों को झूठ बोलने पर विवश कर दिया था। इस सबका परिणाम यह हुआ कि आरोपी तथा उसके साथी बाइज्जत बरी हो गए। खुशी की बात यह रही कि इस केस में अन्तिम परिणाम ऐसा नहीं हुआ। मीडिया की सक्रियता तथा जनाक्रोश ने अपना असर दिखाया। इस केस में एक दिलचस्प मोड़ तब आया जब एक न्यूज चैनल के खोजी पत्रकारों ने महत्वपूर्ण गवाह उस एक्टर का स्टिंग आपरेशन कर यह साबित कर दिया कि वह हिन्दी अच्छी तरह जानता था। परिणाम शुभ हुआ। इस केस में आरोपियों को उम्रकैद की सजा मिली जो माननीय उच्चतम न्यायालय द्वारा भी बहाल रखी गयी। इस केस पर भी एक फिल्म बनी। No one killed Jesica - हमने इस केस का विवरण यहाँ इसलिए दिया कि किस प्रकार ताकतवर लोग गवाहों को प्रभावित करके न्याय की हत्या कर देते हैं। यह आए दिन होता है। सैकड़ों उदाहरण हमारे सामने हैं।

एक आश्चर्य जिसकी वजह से हमने यह विषय उठाया है वह है वर्तमान समय में तथाकथित आध्यात्मिक गुरुओं का भी डॉन बन जाना या उनके सदृश व्यवहार करना। पहले तो ताकतवर नेता अथवा बड़े डॉन ही 'एक करोड़ या एक गोली' के जुमले के प्रदाता होते थे परन्तु आश्चर्य है कि संत और ईशदूत होने का दावा करने वालों ने गुंडों तथा हार्डकोर अपराधियों की भूमिका अपनाली है। आप देख ही चुके हैं कि रामपाल को पकड़ने के लिए ४०००० पुलिसकर्मी लगाने पड़े। तथाकथित आध्यात्मिक

गुरु , विश्वभर में अपने आश्रम स्थापित करने वाले आसाराम बापू बलात्कार के आरोप में जोधपुर जेल में बंद हैं। आसाराम के तथा उनके पुत्र के खिलाफ बलात्कार के आरोपों में प्रोसीक्यूशन के पास दो अत्यंत महत्वपूर्ण गवाह थे जो आसाराम के अत्यंत नजदीकी थे , एक थे उनके निजी वैद्य अमृत प्रजापति जो कि जाहिर है कि आसाराम के सभी गहरे तथा गुप्त राज जानते होंगे तथा दूसरे उनके पाचक जो आश्रम की सभी अंदरूनी बातें जानते थे। प्रजापति ने कहा था कि आसाराम अफीम का सेवन करते थे तथा उनसे अनेक प्रकार की सेक्सवर्धक दवाएँ मँगाते थे। उन्होंने ये भी कहा था कि उन्होंने आसाराम को अनेक बार महिलाओं के साथ आपत्तिजनक अवस्थाओं में देखा था। ऐसे अहम् गवाह अमृत प्रजापति पर तब गोलियाँ चलाई गयीं जब वे राजकोट में अपने क्लीनिक पर थे। अपने मृत्युपूर्व बयान में प्रजापति ने ५ लोगों को नामजद किया पर इस घातक हमले के फलस्वरूप उनकी मृत्यु हो गयी। एक गवाह विदा हो गया। यह हमला किसके कहने पर हुआ होगा यह कहने की आवश्यकता नहीं है।

आसाराम का रसोइया तथा निजी सहायक अखिल गुप्ता भी सरकारी गवाह बनकर आसाराम के लिए जबरदस्त खतरा बन गया। अहमदाबाद आश्रम में एक दशक तक वह संत का करीबी रहा। आश्रम की हर गतिविधि की अखिल को जानकारी होती थी। इसकी पत्नी भी आसाराम के आश्रम में सेवादार थी। अखिल ने यह स्वीकार किया था कि सूरत की बहनों को बुलाने के बाद आश्रम के कमरों में भेजा गया था। इनको भी, मुजफ्फरनगर में जब वे अपने घर लौट रहे थे सड़क पर गोली मार दी गयी। दूसरा महत्वपूर्ण गवाह भी खत्म। इस केस में पीड़िता के पिता को लगातार धमकी दी जा रही है। सूरत में एक गवाह पर तेजाब डाला गया। डॉनगिरी की हद तब पार हो गयी जब जोधपुर में कोर्ट से बाहर निकल रहे गवाह राहुल सचान पर चाकुओं से हमला कर दिया गया। खुले आम दिनदहाड़े वो भी न्याय के मंदिर में। इनके हौंसलों के आगे अच्छे से अच्छा डॉन भी शरमा जायँ।

एक कहावत है कि बड़े मियाँ तो बड़े मियाँ छोटे मियाँ सुभान अल्लाह। आसाराम के सुपुत्र नारायण उनसे भी एक कदम आगे हैं। फरार बने रहने के लिए गुजरात क्राइम ब्रांच के एक इन्स्पेक्टर को २ करोड़ रुपये दिए गए, पकड़े जाने पर ८ शिष्याओं से सम्बन्ध की बात स्वीकार कर ली है। इस प्रकार इन धर्म गुरुओं ने इस आलेख के शीर्षक को सार्थक करते हुए लालच और भय दोनों का प्रयोग अपने विरुद्ध साक्ष्यों को मिटाने के लिए संभावित रूप से किया है।

अगर उपरोक्त सारी स्थितियाँ किसी माफिया डान के केस में होतीं तो किसी को आश्चर्य नहीं होता पर यहाँ चर्चा एक तथाकथित आध्यात्मिक गुरु की हो रही है। अब सोचना हमको है कि हम ही हैं जो इन धर्म गुरुओं को जन्म देते हैं , ताकत देते हैं। अतः आतंक के पर्याय, ऐसी स्थितियों के जनक गुरुओं को किसी भी प्रकार की खाद देनी बंद करें।

- अशोक आर्य
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०९००१३३९८३६

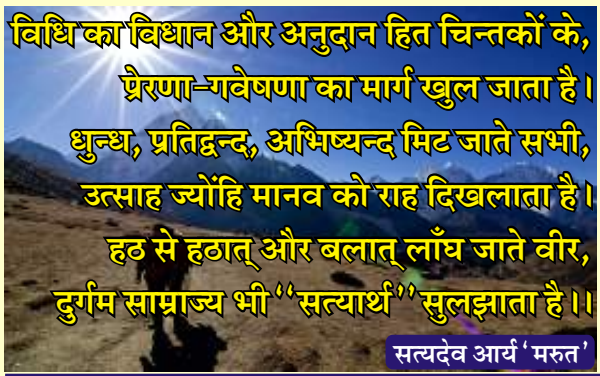

सत्यार्थप्रकाश अब उपलब्ध

सभी सत्यार्थप्रकाश प्रेमियों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि सत्यार्थप्रकाश का स्टॉक समाप्त होने जाने के कारण अनेक सज्जनों के आदेश पर सत्यार्थप्रकाश प्रेषित नहीं कर पा रहे थे। अब सत्यार्थप्रकाश मुद्रित हो शीघ्र उपलब्ध हो रहा है। अतः सभी को उनके आदेशानुसार सत्यार्थप्रकाश शीघ्र प्रेषित कर दिया जावेगा। सत्यार्थप्रकाश पूर्वानुसार ३५०० रु. सैकड़ा ही दिया जावेगा।

- सुरेश पाटोदी (व्यवस्थापक, न्यास)

कल रात देर तक जगा। फिर सो नहीं पाया। घर के बाहर पक्षी आवाज कर रहे थे। कोलाहल से नींद टूट गई। इस कोलाहल को पता नहीं क्यों कविगण कलरव कहते रहे? बाहर निकलकर मैंने देखा तो मोर हल्ला मचा रहे थे। मैंने कहा- 'तुम क्यों चिल्ला रहे हो? सोने क्यों नहीं देते। एक स्मार्ट से दिखने वाले मोर ने इठलाते हुए कहा- साहब, अब तो भोर हो गई। उठ जाइए। रात तो कब की बीत गई। आप उठते क्यों नहीं?' मैंने उसे 'दिस इज नन आफ योर बिजनेस' कहकर हडकाने के लिए मुँह खोला कि मेरे मुँह से

सवाल चू पड़ा- 'पर बाँग देकर जगाने का काम तो मुर्गे करते थे। तुम लोग क्यों जुटे हो इस काम में?' वह बोला- 'साहब! यह काम मुर्गों ने- मोरों को आउटसोर्स कर दिया है। वे खुद तो सो रहे होंगे कहीं। हम जुटे हैं पेट की खातिर।'

मैं वापस लौट रहा था कि एक मोर गर्दन उठाते हुए बोला- 'साहब, आप तो मुझे पहचानते होंगे। मैं वेब पत्रिकाओं की छत पर रहता हूँ। मेरे संपादक ने मुझे आपका लेख लेने के लिए भेजा है। अगले अंक में छापेंगे।' मैं बोला- 'क्या हाल है तुम्हारे संपादक के, मूड ठीक है?' वह बोला- 'हाँ, हवाखोरी के बाद कुछ ठीक लग रहे हैं। देखो कब तक ठीक रहते हैं।' मैंने कहा- 'ठीक है, तुम चलो मैं लेख भेजता हूँ।'

सवेरे आफिस पहुँचा तो लिखने का दबाव हावी था। एक अप्रैल आ गया था वहाँ दिग्दिगन्त में ३१ मार्च हावी था। बिल, रजिस्टर, चिठ्ठी-पत्री चतुर्दिक ३१ मार्च का साम्राज्य पसरा था। सूरज १ अप्रैल का साइनबोर्ड लटकाए था पर फाइलों पर मार्च का कब्जा था। एक दिन- समय दो तारीखें चोर-सिपाही की तरह गलबहियाँ डाले घूम रही थीं।

अपने देश में ३१ मार्च का दिन सबसे लंबा होता है। हफ्तों पसरा रहता है। कहीं-कहीं तो महीनों, सालों तक। बाली को वरदान था कि उसके शत्रु की आधी शक्ति उसे मिल जाती थी। राम को उसे छिपकर मारना पड़ा। यहाँ देख रहा हूँ कि ३१ मार्च का दिन अप्रैल के दिनों को पनपने ही नहीं देता। अप्रैल के दिन आते हैं। अपना सर काटते हैं। मार्च के चरणों में चढ़ाते हैं, चले जाते हैं।

३१ मार्च की ताकत का कारण तलाशने पर पता चलता है कि यह वित्तीय वर्ष का अन्तिम दिन होता है। आज खर्चने का आखिरी दिन होता है सरकारी महकमों में। जो आज खर्चा नहीं होता वह हाथ से निकल जाता है। 'लैप्स' हो जाता है। सारी कोशिशें की जाती हैं कि पैसा इसी साल हिल्ले लग जाए। एक पैन खरीदने की स्वीकृति देने में नखरे करने वाला साहब छापाखाना लगवाने का आदेश बिना जरूरत दे देता है। आज अभी इसी वक्त वाले अंदाज में। सब कुछ ३१ मार्च को।

इस दिन सरकारी कर्मचारियों की कार्यक्षमता चरम पर होती है। ११.३० पर मिली ग्रांट ११.३५ तक ठिकाने लग जाती है। कन्ज्यूम हो जाती है। अगर ३१ मार्च की कार्यक्षमता के अंश के टुकड़े-टुकड़े करके साल के बाकी दिनों में मिला दिए जाएँ तो देश पलक झपकते चमकने लगे। देश २०२० के बजाय अगले साल ही विकसित हो जाय। ३१ मार्च का 'फ्लेवर' ही कुछ ऐसा है। मैं और तमाम बातें कहता पर हमारे दोस्त ने टोक दिया। ये क्या मजाक है। 'मूर्ख दिवस' पर ज्ञान की बातें कर रहे हो। अजीब मूर्खता है। मैंने कहा- 'क्या यह साबित नहीं करता कि ३१ मार्च का समय बीत गया। एक अप्रैल आ गया है।' दोस्त ने कहा- 'करो कोई मूर्खतापूर्ण हरकत।' हम बोले-' लिख रहे हैं यह कोई कम मूर्खतापूर्ण काम है। इससे बड़ी मूर्खता भी की जा सकती है क्या कोई?' दोस्त उवाचा- 'यह मूर्खता तो तुम बहुत दिन से कर रहे हो। कुछ नया करो। अपने से ऊपर उठो। देश, काल, समाज की बात करो। मार्च-अप्रैल को नादान ब्लागरों की तरह मत लड़वाओ।'

हम फौरन गम्भीर हो गए। अपने गुरुकुल गए- इलाहाबाद। अकबर इलाहाबादी से कहा- 'बुजुर्गवार कोई ऐसा शेर बताएँ जो आज के हाल का बयान करता हो।' बुजुर्गवार ने गला साफ करके फरमाया-

कौम के डर से खाते हैं, डिनर हुक्काम के साथ।
रंज लीडर को बहुत है, मगर आराम के साथ।।

जब देश के कर्णधार आराम के मूड में हों तो उनका अनुसरण न करना बेअदबी है। कम से कम मैं ऐसा नहीं कर सकता।

- अनूप कुमार शुक्ल
(साभार- अभिव्यक्ति)

देश में निरन्तर बढ़ते अपराधों विशेषरूप से अपनी आधी आबादी पर हो रहे बलात्कार जैसे जघन्य अत्याचारों को देखते हुए इसके कारणों और दूरगामी समाधानों पर जब हम विचार करते हैं तो देश की वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में कमियाँ और दोष स्पष्ट दिखाई देते हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त देश के नीति नियन्ताओं ने इस प्रचलित शिक्षा प्रणाली को चुन लिया। इस शिक्षा व्यवस्था को ब्रिटिश गुलामी के दिनों में लार्ड मैकाले द्वारा इस देश को सदा सर्वदा के लिए मानसिक रूप से गुलाम बनाए रखने के लिए लागू किया था। लार्ड मैकाले ने इस शिक्षा प्रणाली को ब्रिटिश साम्राज्य की नीवें मजबूत करने के उद्देश्य से इस सोच के साथ थोपा था कि हम इस देश की भावी पीढ़ी को उसकी संस्कृति की जड़ों से काट देंगे। परन्तु ना जाने क्यों किन कारणों से स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त देश के नीति नियन्ताओं ने गुलामी की मानसिकता की प्रतीक मैकाले की शिक्षा प्रणाली को अपनी भावी पीढ़ी के निर्माण के लिए अपना लिया? जिसके दुष्परिणाम हम अपने समाज की वर्तमान अवस्था में भुगत रहे हैं। मैकाले की इस शिक्षा प्रणाली में तथाकथित विकास के नाम पर विनाश की ओर धकेलती इस शिक्षा में संस्कारों, धर्म शिक्षा आदि का कोई स्थान नहीं था। मैकाले की यह शिक्षा प्रणाली केवल अंग्रेजों की सेवा करने के लिए क्लर्क और बाबू बनाने के लिए थी। मैकाले की इस शिक्षा प्रणाली से वर्तमान समय में भी हम अच्छे डॉक्टर, इंजीनियर, मैनेजर आदि तो बना सकते हैं लेकिन इसमें संस्कार देने की कोई व्यवस्था न होने के कारण इन डाक्टरों, इंजीनियरों और मैनेजरों को हम एक अच्छा संवेदनशील मनुष्य बना पाने में पूरी तरह नाकाम हैं। यदि एक अच्छा डॉक्टर एक अच्छा इंसान नहीं है तो ईश्वर का रूप समझा जाने वाला डॉक्टर सेवा की भावना से किए जाने वाले कार्य को धन कमाने का व्यवसाय बना लेता है और शायद तभी किडनी चोरी, कन्याभ्रूण हत्या, माँ के गर्भ में लिंग परीक्षण, दवाइयों और जाँच में कमीशनखोरी जैसी घटनायें सामने आती हैं और पूरे चिकित्सक समाज को शर्मिन्दगी झेलनी पड़ती है। कमोबेश यही स्थिति इस शिक्षा प्रणाली से उत्पन्न प्रत्येक प्रकार के व्यवसायी की हो जाती है।

इसके समाधान पर चिन्तन करते समय हम पाते हैं कि स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त उस समय तीन प्रकार की शिक्षा प्रणालियाँ हमारे देश में उपलब्ध थीं। प्रथम प्राचीनतम गुरुकुलीय शिक्षा व्यवस्था जिसमें शिक्षार्थी ब्रह्मचारी अपने माता-पिता के लाड़-दुलार को छोड़कर आचार्य के गुरुकुल में रहकर शिक्षा ग्रहण करते हुए नया जन्म पाते थे। गुरुकुलीय शिक्षा व्यवस्था में बिना किसी जाति, वर्ण या वर्गभेद के सभी ब्रह्मचारी एक साथ गुरुकुल में स्थापित आचार्य की व्यवस्था के अन्तर्गत रहते हुए जीवन की शिक्षा संस्कार प्राप्त करते थे। यह गुरुकुलीय शिक्षा व्यवस्था पहली बार महाभारत काल में भंग हुई जब राजा धृतराष्ट्र ने पुत्रों के मोह में अन्धे होकर गुरु द्रोण को राज्य व्यवस्था के अन्तर्गत रहकर दुर्योधन आदि समस्त कौरवों को शिक्षा देने के लिए विवश कर दिया। तब शायद पहली बार दुर्योधन आदि को शिक्षा प्राप्त करते समय यह लगा कि हमारा आचार्य तो हमारे पिता की राज्य व्यवस्था के आधीन एक वित्तपोषित कर्मचारी है। अतएव उनके मन में कभी भी आचार्य के प्रति आदर का भाव नहीं रहा और उसी विद्यार्थी काल में आया जिद, उद्दण्डता और बड़ों के प्रति अनादर का भाव। जो आगे चलकर महाभारत के युद्ध का कारण बना। इस समय इस गुरुकुलीय शिक्षा को स्वामी श्रद्धानन्द ने शिक्षायज्ञ में अपना सर्वस्व आहूत करते हुए सफलता पूर्वक हरिद्वार, इन्द्रप्रस्थ, माटिन्डु आदि स्थानों पर गुरुकुल स्थापित किए और इतिहास साक्षी है कि इन गुरुकुलों ने

शिक्षा संस्कार देकर स्वतंत्रता संग्राम में अपने प्राणों की आहुति देने वाले कितने ही क्रान्तिकारी तैयार किए। लेकिन इस गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली को उस समय के नेताओं ने पुरानी धार्मिक कट्टरता वाली और प्रगति विरोधी मानकर खारिज कर दिया।

दूसरी शिक्षा प्रणाली जो शायद समय के अनुकूल थी। महात्मा हंसराज द्वारा नवीन और प्राचीन को जोड़कर बनाई गई एक अनूठे आन्दोलन के रूप में चलाई गई। 'दयानन्द एंग्लो वैदिक शिक्षा व्यवस्था' जिसे श्वेतवस्त्रधारी जीवन समर्पित करके चलाने वाले तपस्वी महात्मा हंसराज ने स्थापित किया। जिसमें आधुनिकतम शिक्षा के साथ-साथ महर्षि देव दयानन्द द्वारा दिए गए सत्य वैदिक आर्य सिद्धान्तों से भी छात्रों का परिचय करवाया जाता था।

परन्तु स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त शायद मानसिक गुलामी से पूरी तरह ना मुक्त हो पाने के कारण उस समय के नेताओं ने गुलामी की प्रतीक मैकाले की शिक्षा व्यवस्था को अपना लिया। बच्चों के मन कोमल, संवेदनशील, कच्ची उर्वर मिट्टी की तरह होते हैं। उनमें जैसे बीज बो दिए जायें बड़े होकर वैसे ही बन जाते हैं। आज की शिक्षा व्यवस्था द्वारा हमने बच्चों को केवल पाश्चात्य भोगवाद की प्रेरणा दी और किसी भी प्रकार के कोई संस्कार नहीं दिए। आज वही पीढ़ी युवा अवस्था में संस्कारविहीन होकर अपराधों की तरफ विशेष रूप से भोगवाद में फँसकर नारी को भोग की वस्तु मानकर बलात्कार सरीखे अत्याचार कर रहे हैं तो हम बड़ी-बड़ी बहस करते हैं और कानून व्यवस्था के लिए एक दूसरे पर दोषारोपण करते हुए राजनीति करते हैं। पर हमारा ध्यान इस बीमारी के मूल यानि दोषी शिक्षा व्यवस्था पर नहीं जाता बल्कि उसका तो हम और अधिक व्यवसायीकरण करते जा रहे हैं। हम आज अपने बच्चों को बड़े-बड़े डोनेशन देकर उच्च शिक्षा इसलिए दिलवाते हैं कि वह बड़ा होकर किसी एम.एन.सी. में मोटा पैकेज लेगा। हम भी एक व्यापारी की तरह बच्चों की शिक्षा में व्यवसाय की तरह इनवेस्ट करते हैं और फिर रिटर्न की आशा करते हैं। हमने खुद भी कभी बच्चों को शिक्षा में संस्कार देने का प्रयास नहीं किया। लेकिन अब भी यदि हम जाग जायें और इन सभी बुराइयों की जड़ वर्तमान शिक्षा प्रणाली में परिवर्तिन करते हुए यदि नैतिक एवं धर्म शिक्षा को भी शामिल कर लें तो निश्चित रूप से बच्चों को संस्कारवान बना पायेंगे और यही बच्चे कल के अच्छे आदर्श नागरिक बनकर राष्ट्र की मजबूत बुलन्द इमारत का आधार बनेंगे और जब हमारे नागरिक संस्कारवान और सम्भ्रान्त होंगे तो अपराध स्वतः कम हो जायेंगे और फिर किसी भी संस्कारवान व्यक्ति से नारी पर अत्याचार स्वतः समाप्त हो जायेंगे। कहा भी जाता है यदि पहले सावधानी बरती जाये और बीमारी पैदा होने वाले कारणों को समाप्त कर दिया जाये तो निश्चित रूप से वह बीमारी नहीं होगी।

- ६०२, जी एच-५३, सैक्टर-२०, पंचकूला

दयानन्द का विचार

संजय सत्यार्थी

सुराज का आधार दयानन्द का विचार।
राजधर्म व्यक्त किया वेद के अनुसार।।
धर्म पर आरुढ़ राजा और प्रजा रहे।
पूर्णतः अध्यात्म को ही सब जानें गहें।
सत्य हो सहाय दूर होवे अनाचार।।
राजधर्म.....

दुष्ट के लिए हो कड़े दण्ड का विधान।
उन्नति का पथ बढ़े होकर के सावधान।
विद्वद्जनों का हो सदा सम्मान और सत्कार।।
राजधर्म.....

यम-नियम पालन करें और नित्य अग्निहोत्र।
धर्मयुक्त आचरण का है यह पावन स्रोत।
सब प्रजा पालन करे सुख शान्ति सदाचार।।
राजधर्म.....

विद्यार्य व धर्मार्य सभा बने राज-आर्य।
विद्या धर्म और राज्य का हो कुशल कार्य।
चरित्रवान् मंत्रियों से हो सफल संचार।
राजधर्म.....

राज्य रक्षा के लिए हों गुप्तचर प्रवीण।
उन्नति और समृद्धि हो भावना न हीन।
'धर्मो धारयते प्रजा' इसी का हो विस्तार।।
राजधर्म.....

- क्रान्तिकारी कवि एवं उपदेशक
आर्य समाज मंदिर, नेमदारगंज
जिला- नवादा (बिहार)
चलभाष- ०९००६१६६१६८

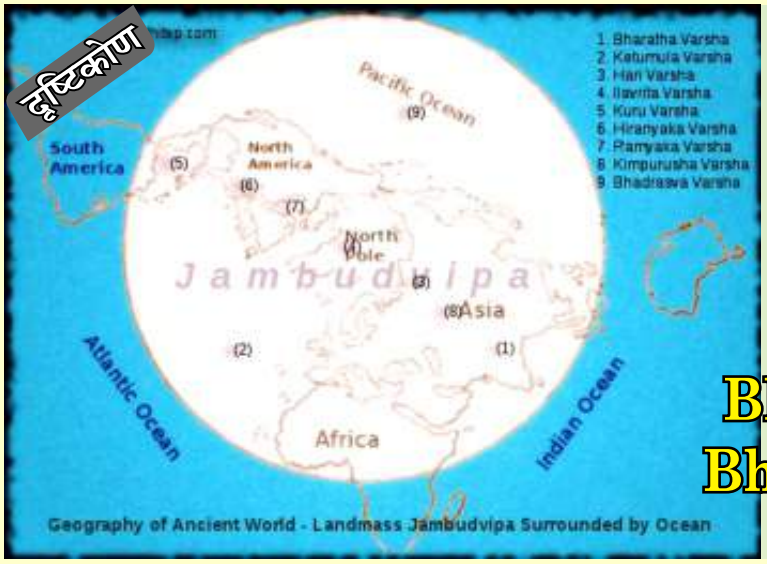

Geographical Span of Ancient India Jambudveepe Bharathavarshe Bharathakhande

- By Gurudev

We know the geography of earth today as shown in the world maps. Though it is actually **incorrect** in depicting the actual geographical area distribution. We today know the seven continents, the five oceans, the land mass or water bodies they span across and so on.

We also know that the ancient Vedic civilization was an advanced one with great achievements in science and technology, and so one becomes curious to know what was the geographical distribution mentioned in the vedic texts like? What were the names given to different parts of our planet Earth in these vedic texts?

This article is an attempt to answer such questions. But before that let us understand a bit about an ancient vedic practice– **The Sankalpa**– which is practiced even today.

The Sankalpa Determination

In the Vedic way of life, Sankalpa means somewhat on lines of free will, a determination, a resolution, a kind of oath which one takes. The veda says that the entire universe itself was created because of a Sankalpa by the Supreme Consciousness.

By making a Sankalpa the person becomes committed to the goal. Sankalpa is an expression by the Saadhaka (doer) about his goals (Saadhana). The Sankalpa becomes the foundation for a person who is all set to achieve a specific goal.

When a person makes a Sankalpa, he is also supposed to mention the time of the day when the Sankalpa was made, the geographical location where the Sankalpa was made, the purpose of the Sankalpa, the mode of achieving the goal, the name of the person doing the Sankalpa and so on. This is called Sankalpa Shlokha.

The Geographical Element of a Sankalpa

In the Sankalpa Shlokha, when one talks about the geography of the location, it starts as follows Jambudveepe Bharatha Varshe Bharata Khande and can go on to mention the specific location like Mangalooru Nagare Svagrahe (meaning at my home which is in the City of Mangalore).

This is something that has been passed down for generations, being practised even today at the beginning of every vedic ritual. And in this article we talk about the the first three terms referring to geography which is Jambudvipa, Bharatha Varsha and Bharatha Khanda. People usually think that Bharatha Varsha and Bharatha Khanda mean the same, but they are not. The hierarchy in the Sankalpa Shlokha clearly says that Bharatha Khanda is inside Bharatha Varsha. So we shall see what they are. And we will also see what exactly is Jambudveepa.

Geography of the Ancient World

As per the ancient Indian Purana & Itihasa texts, in the very ancient times the entire landmass in the northern hemisphere was surrounded by ocean in all the directions. **This giant land mass on earth was called Jambudvipa.** Dvipa in Sanskrit means an

Island. **Jambudveepa consisted of modern Asia, Europe, Africa and North America.**

This Jambudvipa was divided into nine varshas (geographical regions) of which one was Bharatha Varsha. The other eight varshas were Ketumula Varsha, Hari Varsha, Ilavrita Varsha, Kuru Varsha, Hiranyaka Varsha, Ramyaka Varsha, Kimpurusha Varsha, Bhadrasva Varsha.

Of these, **Ilavrita Varsha was at the present North Pole** (the Arctic Region)! More about this could be found in the fantastic research done by Lokamayna Bal Gangadhar Tilak in his book "The Arctic Home in the Vedas"

Approximate Geography of the Ancient World- Above is the Geographical Map of the very ancient times mentioned in the Vedic texts. We have an approximate depiction of Jambudvipa and the nava varshas here. North Pole was at the exact center of Ilavrita Varsha. To the west of Ilavrita varsha was said to be Ketumula Varsha most of which is today under Atlantic Ocean. To the east of Ilvarita Varsha was Bhadrasva Varsha which is today under Pacific Ocean. **On one side of the Ilavrita Varsha were Hari Varsha, Kimpurusha Varsha and Bharatha Varsha.** On the other side of the Ilavrita Varsha were Ramyaka, Hiranyaka and Kuru Varsha. **Kuru Varsha was hence on the opposite side of Bharatha Varsha on the globe.**

It can be observed that in those times, most of South American continent, southern half of African Continent and entire Australia were submerged under water. On the other hand most of modern day Atlantic ocean and Pacific ocean, and the entire Arctic ocean were above sea level.

NOTE: What we believe to be accurate world map today is not that accurate after all either. See Incorrect Geographical Area Distribution in Modern World Map

The Ancient Greater India–Bharathavarsha

In the Ancient Times India was called Bharathavarsha and it extended in the west including modern Egypt, Afghanistan, Baluchistan, Iran, Sumeria upto Caspian Sea (which was called Kashyapa Samudra in those days). Bhratahvarsha was the Greater India while Bharatha Khanda referred to the Indian Subcontinent which lies at the heart of the Vedic Civilization and extended from Himalayas in the north to KanyaKumari in the South. **So the aryan invasion theory of a migration of Aryans from Central Asia to modern northern India is a baseless theory,** for the entire ancient aryan civilizational geography spanned across the above mentioned regions. The very term "arya" in Sanskrit refers not to any race, but actually means a "noble person".

The Puranas and Ithihasas are full of historical developments in the Bharatha Varsha. The now dried up Saraswati river mentioned numerous times in the Vedic text is the heart of this vedic civilization, and it is from here the vedic civilization spread across the Bharatha Varsha during the Vedic period. The "Out of India" theory talks about this. The Saraswati river dried up at the end of the Mahabharatha Period due to geological events in the region. It was around this time that the earlier lush green area of the present Rajasthan had got converted into a desert as we see it today.

During the ancient times Arabian sea did not exist, and the land mass stretched continuously from modern India to Africa. The mighty Saraswati river born in the Himalayas flowed for over 4500 miles into Africa before entering the Oceans. This was the largest and longest river in those days. This is the most mentioned and praised river in the Vedic text. Of the three Ganga Yamuna Saraswati – we know the existence of the first two rivers which flow even today, and Saraswati till recent times was thought to be a mythical river. **But recent satellite photographs and geological data have**

proved the existence of an ancient mighty Saraswati river and its geographical span.

References

The Origin of Human Past Children of Immortal Bliss by V Lakshmikantham, Professor of Mathematics, Florida Institute of Technology, USA

महाभारत सभा पर्व अध्याय २८ में अर्जुन की विजय यात्राओं का वर्णन है। जो भौगोलिक रूप से विष्णु पुराण में दिए तथ्यों की पुष्टि करता है। अर्जुन ने पहले किम्पुरुष वर्ष पश्चात् हरिवर्ष और फिर इलावृत वर्ष को विजित किया। महा.सभा. २८/१,६ पश्चात् केतुमाल वर्ष विजित कर वापस इलावृत आकर पुनः हिरण्यक वर्ष (उत्तरी अमेरिका) विजित किया।

भारतीय प्राचीन साहित्य- यथा महाभारत, रामायण, विष्णु पुराण आदि से विषयान्तर्गत कुछ संदर्भ

'भारतं प्रथमं वर्ष ततः किंपुरुषं स्मृतं, हरिवर्षं तथैवान्यन्मेरोर्दक्षिणतो द्विज'।। विष्णु पुराण, द्वितीय अंश, अध्याय- २, श्लोक- १३

मेरु पर्वत के दक्षिण की ओर पहला भारतवर्ष, दूसरा किम्पुरुषवर्ष और तीसरा हरिवर्ष है।

'मेरो चतुर्दिशं तत्तुनवसाहस्रविस्तृतं, इलावृतं महाभाग चत्वाराश्चात्र पर्वताः' विष्णु पुराण, द्वितीय अंश, अध्याय- २, श्लोक- १६

..... इन सबके बीच में इलावृतवर्ष है जिसमें सुवर्णमय मेरु पर्वत खड़ा हुआ है।

'तस्मादुदिश्युत्तरस्यां वै दिवारात्रिः सदैव हि। सर्वेषां द्वीपवर्षाणां मेरुरुत्तरतो यतः।। विष्णु पुराण, द्वितीय अंश, अध्याय- ०८, श्लोक- २०

सुमेरु पर्वत समस्त द्वीप और वर्षों के उत्तर में है। इसलिए मेरु पर्वत पर सदा {एक ओर} दिन और {दूसरी ओर} रात रहते हैं।

प्राचीन भारतीय साहित्य के अध्येताओं के अनुसार कूर्म पुराण, सूर्य सिद्धान्त तथा पंच सिद्धान्तिका (वराहमिहिर) में भी मेरु पर्वत की स्थिति उत्तरी ध्रुव पर मानी है।

वाल्मीकि रामायण में भी मेरु प्रदेश या उत्तर कुरु में होने वाले प्रकृति के इस विस्मयजनक व्यापार का वर्णन इस प्रकार है-

'तमतिक्रम्य शैलेंद्रमुत्तरः पयसां निधिः, तत्र सोमगिरिर्नाम मध्येहमेमयो महान्।
स तु देशो विसूर्योपि तस्य भासा प्रकाशते, सूर्यलक्ष्याभिविज्ञेयस्तपतेव विवस्वता।।'

महाभारत, सभापर्व २८, दाक्षिणात्य पाठ में अर्जुन की विजय यात्राओं के वर्णन के क्रम में कहा है-

'स ददर्श महामेरुं शिखराणां प्रभुं महत्। तं कांचनमयं दिव्यं चतुर्वर्णं दुरासदम्।।
आयतं शतसाहस्रं योजनानां तु सुस्थितं, ज्वलन्तमचलं मेरुं तेजोराशिमनुत्तमम्'

आगे जाकर उन्हें महामेरु का दर्शन हुआ जो दिव्य तथा सुवर्णमय है .....

'मेरोरिलावृत्तं वर्षं सर्वतः परिमण्डलम्। महाभारत, सभापर्व २८, दाक्षिणात्य पाठ

मेरु के चारो ओर मण्डलाकार इलावृतवर्ष बसा हुआ है।

प्राचीन भारतीय ग्रन्थों यथा विष्णु पुराण, महाभारत (शान्तिपर्व, सभापर्व, भीष्मपर्व आदि) में 'मेरु वर्ष' (मेरु पर्वत/सुमेरु पर्वत) का उल्लेख मिलता है। महाभारत शान्तिपर्व में शुकदेव महामुनि की मिथिला यात्रा के प्रसंग में उल्लेख है कि शुकाचार्य मिथिला जाने के लिए गिरि, सरोवरों, वनों को पार करते हुए क्रमशः मेरु वर्ष (इलावृत), हरिवर्ष, किम्पुरुषवर्ष होते हुए मिथिला राजा जनक के यहाँ पहुँचे। महर्षि दयानन्द ने हरविर्ष को आधुनिक यूरोप माना है। अतः शुकाचार्य यूरोप होकर मिथिला गए।

{आधुनिक युग में जब प्राचीन समय में प्रयुक्त भौगोलिक नामों अथवा ऐतिहासिक नामों का निर्वचन करने लगते हैं तो अत्यन्त सावधानी की आवश्कता है क्योंकि वास्तविक इतिहास अथवा भौगोलिक स्थलों का वर्णन प्रथम तो अनेक ग्रन्थों में यत्र-तत्र बिखरा मिलता है, द्वितीय अलंकारों के अत्यधिक प्रयोग, काल्पनिक कथानकों के समावेश तथा बीच के काल की परम्परानुरूप चमत्कारों का बाहुल्य, सत्य-तथ्य-ग्रहण को कठिन बना देता है।

आर्यावर्तीय परम्परा में किसी भी सद्कार्य का आरम्भ 'संकल्प' से होता है। इस संकल्प में जम्बूद्वीप तथा भारतवर्ष-भरतखण्ड का प्रयोग है। स्वाभाविक उत्सुकता होती है कि जम्बूद्वीप की स्थिति क्या थी। प्राचीन काल में भौगोलिक भूभागों के क्या नाम थे व उनकी क्या स्थिति थी। इसमें 'मेरु पर्वत' की स्थिति अत्यन्त महत्वपूर्ण है। अनेक भूगोलविदों ने इसे आज का उत्तर ध्रुव माना है। परन्तु तब वहाँ निवास योग्य स्थितियाँ थीं। अनेक भूगोलविदों के अनुसार- जम्बूद्वीप में आज के एशिया, यूरोप, अफ्रीका और उत्तरी अमेरिका सम्मिलित हैं न कि केवल भारतीय उपमहाद्वीप जैसा कि कुछ लोग समझते हैं। तत्कालीन समय में भारतवर्ष की स्थिति में आज के मिश्र, अफगानिस्तान, ईरान, सुमेरिया तथा केस्पियन सागर (कश्यप समुद्र) तक का भूभाग आता था।

महाभारत में अनेक स्थलों पर जम्बूद्वीपान्तर्गत ९ वर्षों का वर्णन आता है। अर्जुन ने भारत से उत्तर की ओर जाकर किम्पुरुषवर्ष विजित किया था। (सभापर्व २८.१-२)

महाराज परीक्षित ने प्रायः पूरे जम्बूद्वीप को विजित किया था। प्राचीन समय में जम्बूद्वीप के ९ द्वीप स्थल मार्ग से जुड़े हुए थे।

यह अवश्य ध्यान में रखना चाहिये कि समय के साथ भौगोलिक परिवर्तन भी होते रहते हैं। अतएव भिन्न महाद्वीपों के मध्य जो समुद्रों की स्थिति आज है वह प्राचीन समय में ऐसी ही थी ऐसा नहीं कहा जा सकता। उदाहरण के तौर पर जिस जैसलमेर में आज रेगिस्तान है कभी वहाँ समुद्र था। कभी की अति प्रसिद्ध तथा महत्वपूर्ण सरस्वती नदी, आज विलुप्त है। प्रमाण यह भी मिल रहे हैं कि सरस्वती नदी भारत में ही नहीं सम्पूर्ण जम्बूद्वीप में विस्तृत थी। -**सम्पादक**}

(स्व.) प्रो. उमाकान्त उपाध्याय

विश्व संगठन के वैदिक आधार मैत्री और समता

पश्चिमी देशों में सामाजिक, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों का आधार रहा है, डार्विन के विकासवाद का सिद्धान्त- 'योग्यतम की जीत'। योग्यतम की जीत का अर्थ लगाया जाता है जो बलवान हो, संघर्ष में जीत जाये, वही संसार में टिकता है। उदाहरण देते हैं छोटी मछली को बड़ी मछली खा जाती है और बड़ी मछली का राज होता है। जंगल में शेर आदि, निर्बल जानवरों को खाकर जंगल पर राज करते हैं। शेर जंगल का राजा कहा ही जाता है। यही सिद्धान्त मानव समाज में भी लागू होता है।

पश्चिमी देशों के इस चिन्तन का सबसे बड़ा दोष यह है कि योग्यतम की जीत का यह सिद्धान्त पशु पर तो लागू हो सकता है किन्तु मनुष्य समाज पर यह सिद्धान्त लागू नहीं होता। मनुष्य विवेकमान, विचारशील प्राणी है। मनुष्य के लिए उसके स्वभाव में है न्याय, सत्य, स्नेह, प्रेम, श्रद्धा। मनुष्य अपने स्वभाव से असत्य और क्रूरता से दूर रहता है। सत्य, परोपकार-दूसरों की भलाई पर मनुष्य को श्रद्धा होती है। परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया ही ऐसा है-

'अश्रद्धा मनृत्ये दधात् श्रद्धां सत्ये प्रजापतिः।'

वेद का मंत्र यह कहता है कि परमेश्वर ने मनुष्य के हृदय में सत्य, करुणा, दया आदि के प्रति श्रद्धा पैदा कर दी और असत्य, क्रूरता आदि के प्रति अश्रद्धा पैदा कर दी है। अतः आज भी मानव संगठन का आधार सत्य, आदि मानवीय गुण हैं और असत्य क्रूरता आदि दानवीय गुण संघर्ष के आधार हैं।

कार्लमार्क्स ने जब यूरोप के औद्योगिक विकास का अध्ययन किया तो उसे डार्विन के सिद्धान्त 'योग्यतम की जीत' के आधार पर ज्ञात हुआ कि मिल के मालिक उद्योगपति निर्बल मजदूरों का शोषण कर रहे हैं, अतः मार्क्स ने वर्ग संघर्ष को उन्नति का आधार बताया। किन्तु यह सर्वत्र लागू होने वाला सिद्धान्त नहीं है। यह मार्क्स के समय में अथवा कभी भी कहीं भी धनवानों द्वारा निर्धन मजदूरों का शोषण है। जैसे योग्यतम की जीत मानव संगठन का आधार नहीं बन सकता उसी प्रकार सदा सर्वत्र वर्ग संघर्ष भी मानव संगठन का आधार नहीं हो सकता।

यूरोप में अन्तर्राष्ट्रीय संगठन का आधार 'उपनिवेशवाद' को बनाया। इसी आधार पर अमेरिका, अफ्रीका, भारतवर्ष आदि देशों में अपने देशों के उपनिवेश बनाये। उपनिवेशवाद का सिद्धान्त सभी देशों में संघर्ष का कारण बना। इन्हीं सिद्धान्तों के आधार पर संसार में विश्वयुद्ध हुए। प्रथम विश्वयुद्ध और द्वितीय विश्वयुद्ध का आधार स्वार्थी राष्ट्रवाद बना।

प्रथम विश्वयुद्ध के बाद राष्ट्रों में मिलजुल कर रहने की भावना का थोड़ा-सा उदय हुआ। इसका सुफल निकला संसार के राष्ट्रों ने 'लीग आफ नेशन्स' का संगठन किया

किन्तु इस राष्ट्र संघ का आधार मैत्री और समता नहीं था। इसका फल यह हुआ कुछ ही वर्षों में राष्ट्र संघ का यह संगठन बेकार हो गया और संसार ने विश्वयुद्ध के दूसरे नरसंहार का, अत्यन्त हृदयविदीर्ण करने वाला हिरोशिमा, नागासाकी की एटम बम की विनाश लीला का और हिटलर के गैस चैम्बर की अकल्पनीय विनाश लीला का अनुभव किया।

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद संसार में शान्ति बनी रहे इसके निमित्त 'संयुक्त राष्ट्र संघ' (यू.एन.ओ.) का संगठन किया। विश्वयुद्ध के कारणों का इतिहास कुछ अधिक सुस्पष्ट रूप से सामने था। अतः थोड़ी अधिक सूझ-बूझ, मैत्री और समता दिखायी पड़ती है। 'संयुक्त राष्ट्र संघ' का क्षेत्र भी अधिक बड़ा बना। साधारण समिति, सुरक्षा परिषद, विश्व बैंक, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष आदि की भी संरचना की गयी। यह सभी संगठन थोड़े अधिक मैत्री और समानता के

आधार पर बने हैं किन्तु सब जगह कुछ राष्ट्रों की महिमा संगठन की निर्बलता का कारण बन रही है। अमेरिका अपनी दादागिरी बनाये रखना चाहता है। अमेरिका, इंग्लैण्ड, फ्रांस, रूस, चीन का विशेषाधिकार- वीटो-संगठन को निर्बल बना रहा है। यह राष्ट्र अपने स्वार्थ को अन्य देशों से बढ़कर मानते हैं। यह संगठन के लिए बड़ी भारी निर्बलता बन गया है।

विश्व बैंक और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष में अमेरिकन डॉलर का वर्चस्व सर्वोपरि बना रहता है। संसार की अन्य मुद्राएँ, रुपये आदि क्रय शक्ति के आधार पर नहीं हैं। विश्व बैंक या अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष विनिमय दर को विश्व के बाजार के आधार पर रखते हैं। जबकि विनिमय का आधार 'क्रय शक्ति की समानता' (पर्चेजिंग पावर पैरिटी) होना चाहिये। यह समानता की भावना और सुरक्षा परिषद आदि में वीटो संयुक्त राष्ट्र संघ की चिन्ताजनक निर्बलताएँ हैं। ये निर्बलताएँ विश्व संगठन के लिए आत्मघातक सिद्ध हो सकती हैं।

वैदिक आदर्शों के आधार पर समानता और सबका कल्याण, सारे विश्व का कल्याण काम्य है-

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुखःभाग्भवेत्।।

भारतीय ऋषियों के चिन्तन में जनतंत्र का बहुमत नहीं था। वहाँ ऋषि सर्वसुख, सर्वकल्याण की भावना को प्रश्रय देते हैं।

वेद की दृष्टि में भूतमात्र से, प्राणिमात्र से मित्रता की कामना की गयी है-

मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।
मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।।

अर्थात् हम प्राणीमात्र को मित्रता की दृष्टि से देखें और प्राणीमात्र हमें मित्र की दृष्टि से देखें।

इस वैदिक सूत्र में केवल मनुष्य के प्रति मैत्री की भावना को अल्प समझा गया है। पशु-पक्षी संसार के सभी जीव-जन्तुओं को मैत्री की भावना से देखने की कामना है। यही मैत्री की भावना सभी राष्ट्रों में व्याप्त होकर 'संयुक्त राष्ट्र संघ' जैसे विश्व संगठनों का आधार बने।

संसार के राष्ट्रों के संगठन का सही आधार राष्ट्रों में समता की भावना है। यदि राष्ट्र आपस में छोटे राष्ट्र, बड़े राष्ट्र, बलशाली राष्ट्र, निर्बल राष्ट्र की भावना रखेंगे तो समानताहीन विश्व संगठन दोषपूर्ण और निर्बल हो जायेगा।

ऋग्वेद में विश्व नागरिक की अवधारणा

वेदों के मर्मज्ञ विद्वान् स्वामी समर्पणानन्द जी (बुद्धदेव विद्यालंकार) ने एक अध्ययन प्रस्तुत किया है- 'ऋग्वेद का मण्डल-मणि-सूत्र।' ऋग्वेद में दस मण्डल हैं। प्रथम मण्डल से दशम मण्डल तक एक विचारों की मणिमाला मिलती है। यह मणिमाला विश्व संगठन, विश्व शासन और विश्व नागरिक की अवधारणा को पुष्ट करती है। इस विश्व शासन, विश्व नागरिक और विश्व संगठन का आधार नागरिकों और राष्ट्रों में समानता है। ऋग्वेद के अन्तिम सूक्त का तीसरा मंत्र विशेष रूप समानता का उद्घोष करता है-

समानो मंत्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभि मन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि।।

मंत्र का संक्षेप में भाव यह है कि सभी राष्ट्रों में समान विचार हो और संगठन की समितियों में समानता हो। सबके मन व चित्त में समानता हो। सभी राष्ट्रों में चिन्तन और विचार की समानता हो और सारे राष्ट्रों का प्राप्तव्य समानता के आधार पर हो।

यही मैत्री और समानता विश्व संगठन का सुदृढ़ आधार है।

ईशावास्यम्
पी.- ३०, कालिन्दी हाउसिंग स्कीम
कोलकाता- ७०००८९

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹ ११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री आर.डी. गुप्त, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष,श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभाआर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रहलादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टाक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ.वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, सोलन, माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली

नारी को बराबरी का अधिकार दें

– कृष्ण कुमार यादव

सृष्टि के आरम्भ से ही नर व नारी एक दूसरे के पूरक रहे हैं। यह बात इस तथ्य से बिल्कुल स्पष्ट हो जाती है कि यदि नर व नारी दोनों में से कोई भी एक न हुआ होता तो सृष्टि की रचना ही सम्भव न थी। कुछेक अपवादों को छोड़कर विश्व में लगभग हर प्रकार के जीव-जन्तुओं में दोनों रूप नर-मादा विद्यमान हैं। समाज में यह किंवदन्ती प्रचलित है कि भगवान भी अर्द्धनारीश्वर हैं अर्थात् उनका आधा हिस्सा नर का है और दूसरा नारी का। यह एक तथ्य है कि पुरुष व नारी के बिना सृष्टि का अस्तित्व सम्भव नहीं, दोनों ही एक-दूसरे के पूरक हैं किन्तु इसके बावजूद भी पुरुष व नारी के बीच समाज विभिन्न रूपों में भेद-भाव करता है। जिसकी प्रतिक्रियास्वरूप ''लिंग समता'' अवधारणा का उद्भव हुआ अर्थात् ''लिंग के आधार पर भेदभाव या असमानता का अभाव''।

जैविक आधार पर देखें तो स्त्री-पुरुष की संरचना समान नहीं है। उनकी शारीरिक-मानसिक शक्ति में असमानता है तो बोलने के तरीके में भी। इन सब के चलते इन दोनों में और भी कई भेद दृष्टिगत होते हैं। इसी आधार पर कुछ विचारकों का मानना है कि- ''स्त्री-पुरुष असमता का कारण सर्वथा जैविक है।'' अरस्तु ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि- ''स्त्रियाँ कुछ निश्चित गुणों के अभाव के कारण स्त्रियाँ हैं'' तो संत थॉमस ने स्त्रियों को ''अपूर्ण पुरुष'' की संज्ञा दी। पर जैविक आधार मात्र को स्वीकार करके हम स्त्री के गरिमामय व्यक्तित्व की अवहेलना कर रहे हैं। प्रकृति द्वारा स्त्री-पुरुष की शारीरिक संरचना में भिन्नता का कारण इस सृष्टि को कायम रखना था। अतः शारीरिक व बौद्धिक दृष्टि से सबको समान बनाना कोरी कल्पना मात्र है। अगर हम स्त्रियों को इस पैमाने पर देखते हैं तो इस तथ्य की अवहेलना करना भी उचित नहीं होगा कि हर पुरुष भी शारीरिक व बौद्धिक दृष्टि के आधार पर समान नहीं होता। अतः इस सच्चाई को स्वीकार करके चलना पड़ेगा कि जैविक दृष्टि से इस जगत् में भेद व्याप्त है और इस अर्थ में लिंग भेद समाप्त नहीं किया जा सकता।

वस्तुतः समानता का व्यावहारिक रूप है ''अधिकार की समानता''। यह समानता शारीरिक पहलुओं से परे सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक व पारिवारिक क्षेत्रों में व्याप्त है। इस प्रकार लिंग समानता का तात्पर्य है- जैविक भेदों या लिंग के आधार पर असमानता नहीं होनी चाहिए।'' इसी नैतिक सूत्र पर लिंग-समता का पूरा विचार टिका हुआ है। आज लिंग समता का प्रश्न किसी देश विशेष तक सीमित नहीं रहा वरन् एक विश्वव्यापी आन्दोलन का रूप धारण कर चुका है। चाहे वह राजनीति, अर्थनीति, सामाजिक या रोजगार का क्षेत्र हो, सर्वत्र नारी पुरुषों से कदम से कदम मिलाने का अधिकार मांग रही है। लिंग असमानता का विकृत रूप जन्म से ही देखा जा सकता है जब कन्या-भ्रूण की पेट में ही हत्या कर दी जाती है। शायद इसी कारण माना जाता है कि- ''स्त्री-पुरुष असमता का एक कारण स्त्री स्वयं ही है।'' चाहे वह लालन-पालन हो, शिक्षा हो, रोजगार हो, हर जगह स्त्री ने ही अपनी बेटियों को बेटे के बजाय गौण स्थान प्रदान किया है। अतः जरूरत है कि नारी स्वयं ही नारी भेदभाव का कारण न बने।

यहाँ पर प्रश्न उठता है कि नर-नारी समानता माने क्या? क्या नारी द्वारा हर वो कर्म किया जाना समानता का प्रतीक होगा जो पुरुष कर सकते हैं। तमाम पाश्चात्य देशों में नारी-स्वतंत्रता के नाम पर स्त्रियों ने प्रतीकात्मक रूप में न्यायालयों में या सार्वजनिक जगहों पर अपनी छाती उघाड़ कर स्वतंत्रता का आगाज किया है पर इसे उचित ठहराना संभव नहीं। इस्लामिक देशों में स्त्री के मत को ''आधा मत'' माना जाता है तो तमाम देशों में अभी तक कोई महिला संसद में निर्वाचित होकर पहुँची ही नहीं है। इन सबके विरुद्ध लिंग समता एक प्रतिक्रिया के रूप में उभरी है। इस सबके के पीछे एक तत्वमीमांसीय आधार भी सन्निहित है कि सभी में एक

ही सत् ईश्वर का वास है अतः असमानता जायज नहीं। विभिन्न देशों ने संवैधानिक उपबन्धों द्वारा नर-नारी असमानता का उन्मूलन कर दिया है। भारतीय संविधान भी किसी विभेद को अस्वीकार करता है।

भारतीय परम्परा नारी को पूजनीय मानती है अर्थात् जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवता वास करते हैं पर यह भी समानता नहीं है क्योंकि यहाँ पर नारी आराध्य है और पुरुष सेवक है। नैतिक आधार पर दोनों हेतु समानता की माँग की जाती है अतः लिंग समानता को धार्मिक आधार पर विभ्रमित नहीं करना चाहिए।

नारी मुक्ति आन्दोलन से नारी ही प्रथमतः जुड़ी जिसकी अभिव्यक्ति उनके लेखों, नारों इत्यादि में दिखायी देती है। लिंगीय विभेद के प्रश्न को उठाने वाली प्रथम दार्शनिक चिन्तक साइमन डी बुआ (The second sex-1949) थीं। अस्तित्ववादी विचारों की पोषक बुआ ने स्त्रियों के विरुद्ध होने वाले अत्याचारों ओर अन्यायों का विश्लेषण करते हुए लिखा कि- ''पुरुष ने स्वयं को विशुद्ध चित्त (Being-for-it self- स्वयं में सत्) के रूप में परिभाषित किया है और स्त्रियों की स्थिति का अवमूल्यन करते हुए उन्हें ''अन्य'' के रूप में परिभाषित किया है व इस प्रकार स्त्रियों को ''वस्तु'' रूप में निरूपित किया गया है। बुआ का मानना था कि स्वयं स्त्रियों ने भी इस स्थिति को स्वीकार कर लिया। वर्तमान में कुछ पुरुष चिन्तकों ने भी नारी आन्दोलन के पक्ष में बहुत कुछ लिखा है। वस्तुतः समाज का एक बड़ा वर्ग अब स्वीकारता है कि स्त्री को ''सेक्स'' का पर्यायवाची बनाकर ''यौन प्राणी'' मात्र बना दिया गया अर्थात् पुरुष को विषयी, निरपेक्ष व स्वायत्तरूप में एवं स्त्री को विषय, अन्य, सापेक्ष व पराधीनरूप में माना गया। इस प्रकार एक चेतन वर्ग द्वारा दूसरे चेतन वर्ग को अधीनता प्रदान की गई और दूसरे वर्ग ने अपनी अधीनता स्वीकार कर ली। इस प्रकार स्त्री-पुरुष में एक द्वैत की स्थापना की गई है। एक प्रसिद्ध विचारक के शब्दों में- ''पुरुषों की नैतिकता महज सेक्स तक सीमित है लेकिन औरत की नैतिकता को उसके व्यवहार से जोड़ दिया गया है।''

आज जरूरत है नर व नारी के बीच जैविक विभेद को स्वीकार करते हुए सामंजस्य स्थापित करने और तदनुसार सभ्यता के विकास हेतु कार्य करने की। नारी आन्दोलन मात्र एक पक्ष की आलोचना करके दूसरे पक्ष को मजबूत नहीं बना सकता है। यह सामाजिक स्वास्थ्य के लिए भी स्वास्थ्यप्रद नहीं है। लिंग समानता एक सुसंगत आदर्श है और इसके लिए हमें उन आदर्शों की ओर झाँकना पड़ेगा जहाँ से यह शुरू होती है। इस हेतु जरूरी है कि पुस्तकों के स्तर पर लिंग-अभिनति समाप्त किया जाये। स्त्रियों की शिक्षा, प्रशिक्षण, रोजगार व स्वास्थ्य के सम्बन्ध में ठोस कदम उठाने के साथ-साथ स्त्रियों में सामाजिक और राजनीतिक जागरूकता व चिन्तन पैदा करने की परम आवश्यकता है। यद्यपि संविधान उन्हें शक्तियाँ प्रदान करता है पर स्त्रियों को इसमें स्वयं सक्रिय भूमिका निभानी होगी तथा हर प्रकार के भेद-भाव, शोषण, अन्याय, अत्याचार व दमन का डटकर मुकाबला करना होगा, तभी स्त्रियों की स्वतंत्र पहचान बन पायेगी और एक व्यापक रूप में उनका स्वतन्त्र अस्तित्व कायम हो पायेगा। ऐसी ही स्थिति लिंगीय समानता व्यावहारिक रूप में पूरे विश्व में स्थापित होगी। वर्तमान दौर में स्त्री ही स्त्री की प्रगति में बाधक बनी है। दहेज हेतु वधू को जलाने या प्रताड़ित करने में सास, परिवार में बहू एवं पुत्री को अधिकारों से वंचित करने व नियत्रंण आरोपित करने में सास एवं माँ के रूप में स्त्री ही जिम्मेदार है तो कन्या भ्रूण की हत्या हेतु पत्नी भी उतनी ही जिम्मेदार है। भारत जैसे पारम्परिक समाज में इसे लागू करने में अभी कुछ कठिनाइयाँ है क्योंकि हमारी सांस्कृतिक परम्परा काफी

लम्बी है जबकि कास्मोपॉलिटन समाज में यह परिवर्तन शीघ्रता से हो सकेगा।

इसमें कोई शक नहीं कि लिंग-समता को बौद्धिक स्तर पर कोई भी खण्डित नहीं कर सकता। नर-नारी सृष्टि रूपी परिवार के दो पहिये हैं। तमाम देशों ने संविधान के माध्यम से इसे आदर्श रूप में प्रस्तुत किया पर जरूरत है कि नारी अपने हकों हेतु स्वयं आगे आए। मात्र नारी आन्दोलन द्वारा पुरुषों के विरुद्ध प्रतिक्रियात्मक दृष्टिकोण व्यक्त करने से कुछ नहीं होगा। पुरुषों को भी यह धारणा त्यागनी होगी कि नारी को बराबरी का अधिकार दे दिया गया तो हमारा वर्चस्व समाप्त हो जायेगा। उन्हें यह समझना होगा कि यदि नारियाँ बराबर की भागीरदार बनीं तो उन पर पड़ने वाले तमाम अतिरिक्त बोझ समाप्त हो जायेंगे और वे तनावमुक्त होकर जी सकेंगे। यह नर-नारी समता का एक सुसंगत एवं आदर्शरूप होगा।

निदेशक डाक सेवाए, राजस्थान पश्चिमी क्षेत्र,
जोधपुर (राज.)- ३४२००१
चलभाष- ०८००४९२८५९९

श्री अशोक आर्य सम्मानित

आर्य कन्या विद्यालय समिति, अलवर द्वारा स्वतंत्रता सैनानी श्री छोटूसिंह जी आर्य की अष्टम पुण्यतिथि एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती शारदा देवी आर्या की द्वितीय पुण्यतिथि के अवसर पर एक समारोह में श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर के कार्यकारी अध्यक्ष एवं सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के सम्पादक श्री अशोक आर्य को आर्य जगत् में उनके सक्रिय योगदान के फलस्वरूप पंचम 'कर्मवीर आर्यश्रेष्ठ पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। पुरस्कार के अन्तर्गत सम्मान पत्र के अतिरिक्त ग्यारह हजार रु. की राशि प्रदान की गई। इस अवसर पर शारदा देवी छोटूसिंह आर्य चेरिटेबल ट्रस्ट के मुख्य ट्रस्टी श्री अशोक कुमार आर्य के अतिरिक्त यू.आई.टी. अलवर के पूर्व चेयरमैन श्री प्रदीप आर्य, राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व महामंत्री श्री अमरमुनि, आर्य कन्या विद्यालय समिति के प्रधान श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर के मंत्री- श्री भवानीदास आर्य, न्यास कार्यालय मंत्री- श्री बी. एल. गर्ग एवं अन्य गणमान्य अतिथि उपस्थित थे।

आपकी लोकप्रिय पत्रिका सत्यार्थ सौरभ को संबल प्रदान करने हेतु श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, हरियाणा ने संरक्षक सदस्यता (रु. ११०००) ग्रहण की है। अनेकशः धन्यवाद

- भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास

सत्यार्थप्रकाश पहेली-१५

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (द्वितीय समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१	ता	■	२	२	च	■	३	चा	३		३ ल
४ अ		४ त	■	५ औ		५	से	५	५ न	■	
६	त्यु	६		६ र	■	■	७ कृ		७		ष्टि

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. बालक को प्रारम्भिक उच्चारण सिखाने का दायित्व किसका है?
२. किस आयु पर बालक-बालिका को देवनागरी व अन्य भाषाओं के अक्षरों का अभ्यास करावें?
३. सन्तान का उपनयन संस्कार कर कहाँ भेज दें?
४. जो माता, पिता और आचार्य सन्तान और शिष्यों का ताड़न करते हैं वे उन्हें अपने हाथों से क्या पिला रहे होते हैं?
५. इस प्रकार के अविद्याजन्य भूत प्रेतादि का उपचार कैसे करें?
६. उत्तम विद्वान् लोगों के उपकार के प्रति क्या करना चाहिए?
७. बालकों पर ऊपर से भय प्रदान, पर अन्दर से क्या रक्खें?

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- १३ का सही उत्तर

१. द्वितीय २. धूर्त ३. पाँच जूता ४. उन्मादादि ५. सच्ची ६. निष्फल ७. प्रेत ८. दुःख ९. शोक पत्र

'पूर्व में दिए सत्यार्थ प्रकाश पहेली- १३ का सही उत्तर' की जगह 'सत्यार्थ प्रकाश पहेली- १२ का सही उत्तर' पढ़ें।

सहायक ग्रन्थ- सत्यार्थप्रकाश, पुरस्कार- "अनूठी, अद्भुत पत्रिका सत्यार्थ सौरभ" एक वर्ष तक निःशुल्क, घर बैठे प्राप्त करें।
कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ मई २०१५

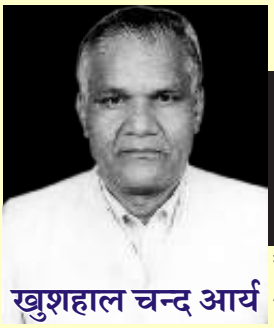

वेदों का एक ही सिद्धान्त सब अन्धविश्वासों को समाप्त करने में पर्याप्त

खुशहाल चन्द आर्य

वैदिक धर्म में सौ नहीं दो सौ नहीं सहस्रों सिद्धान्त हैं जो बुद्धि, तर्क व विज्ञान की कसौटी पर खरे उतरते हैं यानि वेदों के सभी सिद्धान्त बुद्धिसंगत हैं। अन्य सभी मत, पंथ, सम्प्रदायों के सिद्धान्त केवल चमत्कारों और अन्धविश्वासों पर टिके हुए हैं। वैदिक धर्म परमपिता परमात्मा को सर्वव्यापक यानि सृष्टि के कण-कण में उपस्थित तथा सर्वज्ञ, सर्वथा विद्यमान, अजर, अमर व अजन्मा मानता है, जबकि अन्य मत, पंथ व सम्प्रदाय ईश्वर को कोई सातवें आसमान पर, कोई चौथे आसमान पर मानता है, तो शैव अपने ईश्वर शिव को कैलास पर्वत पर मानता है तो वैष्णव अपने ईश्वर विष्णु को क्षीर सागर में एक कमल के फूल पर लेटे हुए मानता है तो कोई अपने आराध्यदेव को बैकुण्ठ में बैठा मानता है। पर ये सब निराधार हैं। कारण एक स्थान पर बैठकर ईश्वर पूरी सृष्टि को नहीं देख सकता है और न ही सभी जीवों के कार्यों को देखकर उनके किए हुए अच्छे या बुरे कर्मों का फल, अच्छे कार्यों का फल सुख के रूप में तथा बुरे कर्मों का फल दुःख के रूप में दे सकता है। इसलिए पूरी सृष्टि का रचयिता परमात्मा कभी भी एक स्थान पर बैठा नहीं रह सकता। उसको सर्वव्यापी, सर्वज्ञ व सर्वशक्तिमान मानना ही पड़ेगा। जैसा वैदिक धर्म मानता है। ईश्वर का कभी जन्म नहीं हो सकता कारण वह जन्म-मरण के बन्धन से परे है, इसीलिए वह अजन्मा, अजर व अमर कहलाता है। जन्म लेने वाला प्राणी कभी भी सर्वव्यापक नहीं हो सकता।

वेद, ईश्वर को सर्वशक्तिमान व न्यायकारी मानता है। वह कठिन से कठिन कार्य में भी किसी दूसरे का सहारा व सहयोग नहीं लेता, वह स्वयं सब काम करता है। जबकि हमारे ईसाई भाई ईसा मसीह को गौड़ (ईश्वर) का इकलौता बेटा मानते हैं और ईसा में विश्वास रखने वाले को ईसा गौड़ से सिफारिश करके अपने भक्त के सब पापों को धुलाकर उसको पूर्ण सुखी बनाता है, चाहे उसके कर्म कितने भी बुरे हों। ऐसे ईश्वर को आप कैसे न्यायकारी व सर्वशक्तिमान कह सकते हैं? ऐसे ही हमारे मुस्लिम भाई मोहम्मद साहब को खुदा (ईश्वर) का पैगम्बर यानि

दूत मानते हैं। उनका भी यही मत है जो मोहम्मद साहब को खुश कर लेगा, खुदा भी उसके ऊपर खुश हो जायेगा और उसे जन्नत (स्वर्ग) भेज देगा। चाहे उसके कर्म कैसे भी घिनौने हों। इसी प्रकार हमारे पौराणिक भाई भी किसी से पीछे नहीं। वे भी किसी देवता के मार्फत चाहे वह राम हों, कृष्ण हों, हनुमान हों और चाहे दुर्गा हों या काली हों किसी की भक्ति करने से ही स्वर्ग मिल सकता है ऐसा मानते हैं। ईश्वर की सीधी स्तुति, प्रार्थनोपासना करना कोई नहीं बतलाता। जब ईश्वर अपने किसी काम में दूसरे का सहयोग नहीं लेता, वह अपनी न्याय-व्यवस्था से स्वयं ही सब काम करता है तो फिर किसी पुत्र, पैगम्बर या किसी देवता को बीच का सहयोगी मानना, यह मनुष्य की अज्ञानता ही कहलाई जायेगी।

वेदों का एक प्रमुख सिद्धान्त यह है कि मनुष्य प्रकृति के विरुद्ध कभी कोई काम नहीं कर सकता। जैसे मनुष्य आँखों से देखता है और कानों से सुनता है। यदि कोई यह कहे कि फलाँ मनुष्य कानों से देखता है और आँखों से सुनता है तो इसे प्रकृति नियम के विरुद्ध होने से सत्य मत मानो। इन असत्य और असम्भव बातों को, सत्य मानने वाले इन बातों को चमत्कार का रूप दे देते हैं और कहते हैं कि यह पहुँचा हुआ सन्त या संन्यासी है, यह ऐसे चमत्कार कर सकता है। किसी ने कहा कि एक पहुँचे हुए संन्यासी को मैंने एक ही समय में कलकत्ता, मुम्बई, दिल्ली, मद्रास और अहमदाबाद पाँच जगह देखा। यह प्राकृतिक नियम के विरुद्ध है कारण यह कि एक व्यक्ति एक ही समय में एक ही स्थान पर रह सकता है। यदि कोई इससे विपरीत कहे तो उसे मिथ्या समझें। वर्तमान के सभी मत, पंथ व सम्प्रदाय इन चमत्कारों के आधार पर ही अपने अपने मत को सबसे अच्छा बतलाते हैं और एक से एक मनघड़न्त बात जोड़कर अपने मत की महानता सिद्ध करते हैं। जैसे ईश्वरीय नियम है कि जो जीव जैसा कर्म करेगा उसको वैसा ही फल मिलेगा। परन्तु ईसाई भाई कहते हैं कि आप ईसा की शरण में आ जाओ तो गौड़ (ईश्वर) आपके सब पाप माफ कर देंगे। यह ईश्वरीय नियम के विरुद्ध है इसलिए असंभव है। इसी प्रकार मुस्लिम भाई भी कहता है कि तुम मोहम्मद साहब को खुश कर दो तो खुदा भी तुम्हें मोहम्मद साहब के कहने से जन्नत में भेज देगा चाहे तुमने कितने भी पाप किए हों। यही बात हमारे सनातनी भाई भी कहते हैं कि आप मंदिर के दिन में दो बार दर्शन कर लो, आपको ईश्वर

हर काम में सफलता देगा चाहे आप दिनभर कितना भी पाप करते रहो। वैदिक धर्म ही एक ऐसा है जो अच्छे काम का फल अच्छा और बुरे काम का फल बुरा ही ईश्वर देता है ऐसा मानता है। ईश्वर अपने बनाए नियमों के प्रतिकूल न तो कोई काम करता है और न कर सकता है, कारण ईश्वर भी अपने नियमों से बन्धा हुआ है। ऐसी सच्ची बात वैदिक धर्म ही कर सकता है, अन्य मतों में इतनी सच्ची बात कहने की ही हिम्मत नहीं। इसलिए हर व्यक्ति को वैदिक धर्म अपनाना चाहिए और ईश्वरीय ज्ञान वेदों के अनुसार चलकर अपने जीवन को सफल व शान्तिमय बनाते हुए मोक्ष की ओर अग्रसर होना चाहिए।

वैसे सृष्टि नियम के विरुद्ध चमत्कारिक बातें सभी मतों में हैं।

जैसे मुस्लिम भाई कहते हैं कि हमारे पैगम्बर मोहम्मद साहब ने एक अंगुली से चाँद के दो टुकड़े कर दिए। परन्तु हमारे पुराणों में सबसे अधिक चमत्कारिक बातें हैं, जैसे हनुमान जी ने अपने बचपन में ही सूर्य को मुख में रख लिया, कुन्ती के कर्ण कान से उत्पन्न हुआ, कृष्ण ने गोवर्धन पर्वत को अपनी अंगुली से उठा लिया, कृष्ण ने द्रौपदी का चीर बढ़ा दिया आदि। भूत-प्रेत, गण्डा-ताबीज, श्रद्धा-तर्पण, फलित ज्योतिष, ग्रहों का नाराज व खुश होना तथा मूर्तिपूजा व अवतारवाद को मानना अन्धविश्वास व पाखण्ड है। क्योंकि ये सब बातें प्रकृति के नियम के विरुद्ध हैं इसलिए इनको न मानकर वैदिक धर्म को मानना ही हर व्यक्ति के लिए श्रेयस्कर व लाभदायक होगा।

वैदिक धर्म में ईश्वर के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करने के लिए संध्या करना, दूषित वातावरण को शुद्ध करने के लिए हवन करना, शरीर को स्वस्थ रखते हुए यम-नियमों से समाधि तक पहुँचने के लिए अष्टांग योग करना, दूसरों की भलाई के लिए परोपकार करना तथा वेदों सहित सभी आर्ष ग्रन्थों को पढ़ना और उनके अनुसार जीवन बनाना आदि मुख्य सिद्धान्त हैं जो तर्क, बुद्धि व विज्ञान संगत कर्म हैं, जो मनुष्य को स्वस्थ रखते हुए सुखी जीवन बनाने में पूर्ण सहायक हैं इसलिए यदि हम अपने जीवन को स्वस्थ रखना चाहते हैं तो हमें मतों व पन्थों को छोड़कर वैदिक धर्म को अपनाना चाहिए जिससे हम अपने परिवार, समाज, राष्ट्र व केवल मानवमात्र ही नहीं बल्कि प्राणीमात्र के प्रति अपने कर्तव्य का पालन करते हुए अपने जीवन को सफलता की ऊँचाइयों को छूते हुए मोक्ष के अधिकारी बनें। इससे उत्तम अन्य कोई मार्ग नहीं।

– गोविन्दराम एण्ड सन्स
१८० महात्मा गाँधी रोड, दो तल्ला
कोलकाता– ७००००७,
मोबाइल ०९८३०१३५७१४

भय बिन प्रीति न होय गोपाला

प्रो. शामलाल कौशल

कहावत मशहूर है कि भय बिन प्रीति न होय गोपाला। वैसे देखा जाय तो प्रीति या प्रेम प्यार एक स्वतः स्फुटित होने वाली मानसिक स्थिति है। जब हम किसी को देखते ही एक नजर में प्रेम करने लगते हैं उसमें किसी प्रकार का दबाव, स्वार्थ या मजबूरी नहीं होती। अतः यह कहा जा सकता है कि यहाँ भय बिन प्रीति संभव है। लेकिन इस कहावत का अगर दूसरा पहलू देखें तो पता चलता है कि यहाँ भय बिन प्रीति तो संभव ही नहीं। अधिकांश मामलों में हमारे मन में श्रद्धा, प्रेम, सेवा, दया, तरस आदि का पैदा होना किसी न किसी स्वार्थ, भय या दबाव के कारण ही होता है। परमात्मा का स्मरण या भजन हम भयवश करते हैं। झूठ, पाप, पाखण्ड, अत्याचार, हत्या, हिंसा, बलात्कार आदि अधम कर्म करने वालों को हम परमात्मा, नर्क या कानून का भय दिखाकर ही सही रास्ते पर लाने की कोशिश करते हैं। हम अच्छे संस्कारों के नाम पर अपने माता-पिता की सेवा करने की बात को सबसे बड़ी तीर्थ यात्रा का नाम सिर्फ इसलिए देते हैं ताकि हमारी संतान भी हमारे बुढ़ापे में हमारी सेवा करे। अगर ध्यान से देखा जाये तो नैतिकता के पाठ को भय की पृष्ठभूमि के बिना समझा ही नहीं जा सकता। अंग्रेजी में एक कहावत है कि 'Spare the rod, spoil the child' कुछ हद तक सही है लेकिन पूर्ण तौर पर नहीं। अगर बच्चे को माँ, बाप, बुजुर्गों तथा शिक्षकों का भय न हो तो वे पढ़ेंगे ही नहीं तथा बड़े आदमी बनने का इनका सपना सपना ही रह जायेगा। अगर भय नाम की चीज न हो तो पुलिस वालों से कोई डरेगा नहीं। आखिर कोई बात तो होगी जो पुलिस विभाग, आयकर विभाग तथा न्यायालय की हमारे समाज में अति विशिष्ट भूमिका है। साथ में यह भी ठीक है कि जरूरत से ज्यादा भय/आतंक समाज में लोगों के मन में नफरत भी पैदा कर देता है, भ्रष्टाचार तथा सामाजिक विषमता को भी पैदा कर देता है। पहले स्कूलों में बच्चों की खूब पिटाई होती थी लेकिन आजकल बच्चों को पीटने के बदले में उन्हें समझाने पर ज्यादा बल दिया जाने लगा है। आजकल के माता-पिता तो स्वयं बच्चों को पीटे जाने के विरुद्ध स्कूल प्रबन्धन के पास शिकायत करने पहुँच जाते हैं। अमेरिका जैसे देशों में तो बच्चे प्रताड़ित या पीटे जाने पर अपने माता पिता की पुलिस में शिकायत करके उन्हें जेल भिजवा सकते हैं। हे राम! कैसा जमाना आ गया है। लेकिन इस सारे का परिणाम यह हुआ है कि बच्चों में अनुशासनहीनता, अपराधबोध, मादक पदार्थों के सेवन की प्रवृत्ति, सैक्स के प्रति आकर्षण, हिंसा, क्रोध तथा अहंकार की प्रवृत्ति बढ़ रही है। कारण, बच्चों को किसी का भय ही नहीं। हमारे यहाँ जेलों को 'सुधार गृह' कहा जाता है। वहाँ बड़े-बड़े अपराधी लोग तो पहले से भी बड़े अपराधी बनकर निकलते हैं। आजकल कानून का डर किसी को है ही नहीं। लोग अपराध करते हैं, रिश्वत देकर साफ बच जाते हैं। कई बार अखबारों में पढ़ने को मिलता है कि अमुक जेल से कैदियों से मोबाईल फोन, मादक पदार्थ आदि बरामद हुये। पूछा जा सकता है कि ये चीजें जेल में कैसे पहुँचीं। आज समाज में भयवश प्रीति बढ़ती हुई दिखाई देती है। जब कोई मंत्री या बड़ा अफसर कहीं दौरे पर जाता है तो उसका बाजे गाजे से खूब स्वागत किया जाता है, सभी लोग आपस में ना चाहते हुए भी उसके बारे में प्रेमपूर्वक बातें करते हैं। पति-पत्नी आपस में इकट्ठे वर्षों तक रहते हैं फिर भी उनमें दिल से आपस में कोई प्रीति नहीं होती। एक दूसरे से खूब ईर्ष्या करते हैं। बहुत मामलों में मजबूरी में इकट्ठे रहते हैं, कुछ मामलों में तलाक भी हो जाता है। हमारा मंदिरों, तीर्थ स्थानों में जाना, दान, पूजा, व्रत रखना सभी परलोक बिगड़ने से बचने के भय के कारण होता है। कोई आदमी नाराज होकर हमारा नुकसान ना कर दे इसलिए हम उसकी चापलूसी करते हैं जिसे वह अपने प्रति प्रीति ही समझ लेता है। अगर कोई भैंस खेत में घुस जाये, उसे वहाँ से निकालने के लिए जब तक उसे लट्ठ मारे जाने का भय नहीं दिखाया जायेगा वह वहाँ से बाहर नहीं जायेगी। अतः यह कहा जा सकता है कि भय बिन प्रीति न होय गोपाला। लेकिन हमें याद रखना चाहिये कि अगर भय एक सीमा से ज्यादा होगा तो विरोध, अवज्ञा, अवमानना, ईर्ष्या, आतंकवाद आदि बढ़ने की संभावना बढ़ जायेगी। अतः अति सर्वत्र वर्जयेत। मध्यम मार्ग ही उचित समझा जाता है।

मकान नं.- ९७५-बी/२०
ग्रीन रोड, रोहतक- १२४००१ (हरि.)

शृंगवेर से जिंजर (Ginger) तक

डॉ. पूर्ण सिंह डबास

संस्कृत का शृंग शब्द- 'पशु के सींग, हाथी-दाँत, पर्वत-शिखर, भवन आदि की ऊँची चोटी, भावातिरेक, स्त्री का वक्षस्थल तथा किसी भी वस्तु का उभरा भाग या सिरा' आदि अनेक अर्थों में प्रयुक्त होता है। विद्वानों का विचार है कि लैटिन का कोर्नु (Cornu) 'सींग'; निम्न लैटिन का कोर्ना (Corna); फ्रांसीसी का कोर्न (Corne); 'सींग; सींग की तरह उभरी सूजन'; अंग्रेजी का कॉर्न (Corn) 'पाँव के तले पर हो जाने वाली कठोर अपवृद्धि; घट्ठा या डील'; गॉथिक का हौर्न (haurn) तथा जर्मन एवं अंग्रेजी का हॉर्न (horn) 'सींग, तुरही' भी सं. शृंग के ही रूपान्तरण हैं।

इसी शृंग से संस्कृत में शृंगवेर शब्द बनता है जिसका अर्थ- 'सूखा या गीला अदरक' है। वस्तुतः यह सं. शृंग (= सींग) तथा वेर (= शरीर, काया) से निर्मित एक समस्त पद है जिसका मूलार्थ है- 'सींगों वाला' या 'सींगों जैसे रूपाकार वाला'। चारों तरफ सींगों जैसी बनावट होने के कारण 'अदरक' का यह (शृंगवेर) नाम पड़ा। तुलनीय है कि 'शृंग' से निर्मित सं. का शृंगट या शृंगटक (= सींगों से युक्त) शब्द भी इसी प्रकार का है जो सींगों जैसी बनावट वाले कई कंदों और फलों के लिए प्रयुक्त होता है। पालि सिंघाटक, प्राकृत सिंघाडग तथा हिन्दी का सिंघाड़ा इसी 'शृंगटक' से विकसित है।

संस्कृत शृंगवेर, ग्रीक भाषा में जिज्जीबेरिस (ziggiberis) रूप में मिलता है। वहाँ से यह लैटिन में गया जहाँ इसका रूप विकसित होकर ज़िंजिबेर (zingiber) बन गया। लैटिन से चलकर यह पुरानी फ्रांसीसी में जंजिब्रे (gengibre) रूप में पहुँचा जो थोड़ा परिवर्तित होकर आधुनिक फ्रांसीसी में जिंजेम्ब्रे (gingembre) रूप में प्रयुक्त होता है। अंग्रेजी ने इसे पुरानी फ्रांसीसी से ग्रहण किया। पुरानी फ्रांसीसी का जंजिब्रे मध्यकालीन अंग्रेजी में गया जहाँ इसके जिंजवेरे (gingeuere) तथा जिंजर (ginger) दोनों रूप मिलते हैं। मध्यकालीन अंग्रेजी का जिंजर (ginger) आज तक यथावत् रूप में चला आ रहा है।

शृंगवेर के रूपान्तरण अन्य अनेक यूरोपीय भाषाओं में भी मिलते हैं। उदाहरण के लिए नार्वेजियन इंगॅफेर (ingefær); स्वीडिस इंगॅफार (ingfär) तथा इतालवी ज़ेंज़ेरो (zenzero) आदि रूप देखे जा सकते हैं। संस्कृत से ही यह फारसी में गया जहाँ इसका रूप जंजबील है।

हो सकता है 'अदरक' के बोधक चीनी शब्द च्यांग (jiang) का भी संस्कृत शृंग या शृंगवेर से कोई सम्बन्ध हो।

- एम-९३, साकेत, नई दिल्ली- ११००१७
चलभाष- ०९८१८२११७७१

भूल सुधार

फरवरी १५ अंक, पृष्ठ २० पर आर्यावर्त्त का त्रुटित नक्शा छप गया है कृपया उसे शून्य समझें। श्री जगदीश प्रसाद हरित, नीमच ने इस ओर ध्यान आकर्षित किया है वे धन्यवाद के पात्र हैं।

- नवनीत आर्य

आर्य समाज औरंगाबाद, मीतरौल जिला-पलवल के वार्षिक चुनाव होली पर्व के अवसर पर सम्पन्न हुए। इसमें प्रधान, मंत्री व कोषाध्यक्ष पद का दायित्व क्रमशः श्री श्याम सिंह आर्य 'वेद निपुण', श्री वीरेन्द्र सिंह आर्य व श्री ठाकुर लाल आर्य को दिया गया। आप सभी को सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से बधाई व शुभकामनाएँ।

सत्यार्थ सौरभ के वर्तमान ग्राहकों के लिए रियायती योजना

आपकी सदस्यता को यदि आप पंचवर्षीय सदस्यता में परिवर्तित करते हैं तो चार सौ की बजाय केवल तीन सौ रु. भेज दें तो आपको पंचवर्षीय सदस्यता सूची में नामित कर लिया जायेगा। इसी प्रकार अगर आप आजीवन सदस्य बनना चाहते हैं तो बजाय एक हजार रु. के मात्र नौ सौ रु. प्रेषित करने का श्रम करें तो आपको आजीवन सदस्यता सूची में सम्मिलित कर लिया जायेगा।

दिन को सुदिन (शुभदिन) कैसे बनावें?

– उदयनाचार्य

प्रत्येक मनुष्य सदा ही शुभ एवं सुखद परिणामों को चाहता है। पर आज का मनुष्य शुभ परिणामों को प्राप्त करने हेतु करणीय कर्मों से सर्वथा अनभिज्ञ है। तत्परिणामतः वार, तिथि, मुहूर्त, नक्षत्र, ग्रह, राशि आदियों में से कुछ को शुभ एवं कुछ को अशुभ मानता है और इन्हीं के कारण शुभ-अशुभ वा सुख-दुःख प्राप्त होते हैं, ऐसी मान्यता रखता है।

यह सब पौराणिक युग में लिखित फलित ज्योतिष के ग्रन्थों का दुष्प्रभाव है। जो कि सर्वथा कल्पित, निराधार, अविवेक पूर्ण हैं। ईश्वर ने यह सृष्टि जीव के भोग तथा अपवर्ग (मोक्ष) के लिए अर्थात् मनुष्य के कल्याण के लिए ही बनायी है (द्र. योगदर्शन २.१८)। तब तो इसकी प्रत्येक वस्तु मनुष्य के लिए हितकारी व शुभ ही रहेगी। अब शुभ-अशुभ, हित-अहित आदि तो मनुष्य के विवेक और कर्मों पर निर्भर हो जाता है। यदि कोई ग्रह, वार, तिथि आदि में से कुछ को अशुभ मानता है तो वह दोष उन ग्रहादि का नहीं अपितु ईश्वर पर जाता है क्योंकि उनका निर्माता ईश्वर है। फलित ज्योतिष (?) को मानने वाले लोग यह विचार कर नहीं पा रहे हैं कि उनकी वह आस्था ईश्वर की कर्म व्यवस्था पर प्रश्नचिह्न लगाती है। शराब, मांस के व्यापारी भी अपनी अपनी दुकानों में अपने-अपने इष्ट देवी देवताओं के चित्र लगाते हैं और प्रतिदिन उनकी पूजा भी करते हैं। साथ में प्रत्येक कार्य को शुभ-अशुभ का विचारकर व पंडितों से पूछकर ही करते हैं। अपने घर व दुकान आदि को वास्तुविदों के परामर्श से ही बनाते हैं, यहाँ तक कि अपने मांसादि व्यापार के लिए भी शुभमुहूर्त (?) निकाल कर ही आरम्भ करते हैं। तो क्या उतने से ही उन व्यक्तियों का कल्याण होगा? क्या उन्हें शुभ वा सुखद परिणाम मिलेंगे? उन व्यापारों के मुहूर्त निकालने वाले पंडित व ग्रन्थ मान्य वा प्रामाणिक कहने योग्य हैं? क्या यह सब ईश्वर पर अनास्था नहीं है? अज्ञान नहीं है? स्पष्ट है कि यह सब केवल अपने अज्ञान वा अविवेक को कुछ काल तक छिपाकर सन्तुष्ट होने का गोरखधन्धा मात्र है। किसी कवि ने इसी मर्म को बड़े सरल और तात्विक शब्दों में कहा है-

पुण्यस्य फलमिच्छन्ति पुण्यं नेच्छन्ति मानवाः।
फलं पापस्य नेच्छन्ति पापं कुर्वन्ति मानवाः॥

मनुष्य पुण्य कर्मों के फलों (सुखों) को तो बहुत चाहता है, पर पुण्यकर्म करने के लिए उत्सुक नहीं रहता। पापकर्मों के फलों (दुःखों) को तो कभी नहीं चाहता, पर पापकर्म करने के लिए सदा उद्यत रहता है। इस संसार में फैले हुए अज्ञान, पाखण्ड, पौराणिकता, फलित ज्योतिष आदि का मूल कारण यही है।

वेद और आर्षग्रन्थों का दृष्टिकोण उससे सर्वथा भिन्न है। जो त्रैकालिक सत्य है। वेद का सिद्धान्त है कि शुभ-अशुभ, भाग्य आदि सभी मनुष्य के हाथ में हैं अर्थात् उसके कर्मों के अधीन हैं-

कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहितः। (अथर्व. ७.५०.८)

मनुष्य अपने जीवन के प्रत्येक दिन को शुभ दिन व सुदिन कैसे बनाए, अपने जीवन को सुख-शान्ति से परिपूर्ण कैसे बनावे? इसे वेदमंत्रों के माध्यम से देखें और जानें-

जातो जायते सुदिनत्वे अह्नां समर्य आ विदथे वर्धमानः।
पुनन्ति धीराः अपसो मनीषा देवया विप्र उदियर्ति वाचम्॥

(ऋ ३.८.५)

(जातः) वेद ज्ञान को प्राप्त किए हुए द्विज (अह्नां सुदिनत्वे जायते) अपने कुल, समाज, देश, धर्म आदि के सुदिनत्व अर्थात् समुन्नति के लिए समर्थ होता है। और वह (अर्यः विदथे सम्+आ+वर्धमानः) अपनी इन्द्रियों का स्वामी बनकर ज्ञानयज्ञ में, ज्ञान के प्रचार-प्रसार में भली-भाँति अग्रसर होता रहता है, अथवा (सन्मर्ये विदथे आ+वर्धमानः) विद्वानों की ज्ञानगोष्ठियों में प्रशंसनीय होता है तथा वह (विप्रः देवयाः वाचम् उदियर्ति) विद्वान् ईश्वर का यजन अर्थात् ईश्वर की आज्ञा का पालन करते हुए वेदवाणी का उपदेश करता है। इस प्रकार वे (धीराः अपसः मनीषा पुनन्ति) मेधावी, पुरुषार्थी पुरुष अपनी बुद्धि, प्रतिभा से सब मनुष्यों को पवित्र करते हैं।

उन्हीं का (दिन) सुदिन होता है जो विद्या और उत्तम शिक्षा

का संग्रह कर विद्वान् होते हैं। जैसे शूरवीर पुरुष दुष्टों को जीत के धनादि ऐश्वर्य के साथ सब ओर से बढ़ते हैं, वैसे ही विद्या से विद्वान् (अज्ञान को नष्ट कर ज्ञान, यश आदि के साथ सब ओर से) बढ़ते हैं' (महर्षि दयानन्द ऋ. ३.८.५)

नि त्वा दधे वर आ पृथिव्या इळायास्पदे सुदिनत्वे अह्नाम्।
दृषद्वत्यां मानुष आपयायां सरस्वत्यां रेवदग्ने दिदीहि।।

(ऋ.३.२३.४)

प्रभु कहते हैं कि जीव! (त्वा पृथिव्याः वरे निदधे) तुझे इस पृथिवी के सर्वश्रेष्ठ स्थान पर अर्थात् सर्वोत्तम शरीर में स्थापित किया हूँ। (इळायाः पदे निदधे) गरिमामय वेदज्ञान प्राप्त करने के योग्य शरीर में प्रतिष्ठित किया हूँ तथा (अहनां सुदिनत्वे निदधे) तुम्हारे जीवन के दिनों में माता पिता, आचार्य, गुरु व विद्वानों को संगति वाले शुभदिन अर्थात् शुभ अवसर प्रदान किया हूँ। (अग्ने दृषद्वत्यां मानुषे आपयायां सरस्वत्यां रेवत् दिदीहि) हे प्रगतिशील जीव! तू इस पत्थर के सदृश सुदृढ़ शरीर में रहते हुए प्रभु की प्राप्ति के लिए उपासना में एवं वेदज्ञान की दीप्ति में स्थिर रहकर, ऐश्वर्यवान् होकर प्रकाशित हो जाओ।

उप नो वाजा अध्वरमृभुक्षा देवा यात पथिभिर्देवयानैः।
यथा यज्ञं मनुषो विक्ष्वा३ सु दधिध्वे रण्वाः सुदिनेष्वह्नाम्।।

(ऋ.४.३७.१)

हे (ऋभुक्षाः वाजाः देवाः) महद् मेधा सम्पन्न विद्वानो! आप लोग (नः अध्वरम् उपयात) हमारे यज्ञ में उपस्थित हों और (देवयानैः पथिभिः) अलौकिक आनन्द को प्राप्त कराने वाले दिव्यमार्ग के द्वारा हमारी जीवन यात्रा को प्रशस्त कीजिए। (रेण्वाः मनुषः) रमणीय मनीषियो! आप लोग (अह्नाम् सुदिनेषु) संवत्सर के सामान्य दिनों में आने वाले विशिष्ट पर्व दिनों में या उन पर्वीय यज्ञों में उपस्थित होकर (आसु विक्षु यथा यज्ञं दधिध्वे) इन प्रजाओं में यथार्थ यज्ञ को अर्थात् ईर्ष्या, द्वेषादि दोषों से रहित परस्पर दान, संगति, प्रीति आदि व्यवहारों को प्रचलित कराइये अर्थात् इन पवित्र कर्मों से ही दिन शुभदिन हो सकते हैं, अन्यथा नहीं।

इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहित चित्तिं दक्षस्य सुभगत्वमस्मे।
पोषं रण्वीणामरिष्टिं तनूनां स्वाद्मानं वाचः सुदिनत्वमह्नाम्।।

(ऋ २.२१.६)

(इन्द्र) हे प्रभो! आप (अस्मे) हमें (श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि) शुद्ध, पवित्र धन प्रदान कीजिए। (दक्षस्य चित्तिम्) कुशल व्यक्तियों का सामर्थ्य व ज्ञान हमें प्राप्त कराइये। (सुभगत्वम्) उत्तम ऐश्वर्य (रयीणां पोषम्) ऐश्वर्यों की वृद्धि (तनूनाम् अरिष्टिम्) शरीर की निरोगता और (वाचः स्वाद्मानं) वाणी की मधुरता या जीभ के लिए शुद्ध, सात्विक एवं स्वादिष्ट भोजन प्रदान कर (अह्नां सुदिनत्वम्) हमारे जीवन के प्रत्येक दिन को शुभ दिन बनाइये।

जीवन की चरितार्थता अर्थात् हमारे प्रत्येक दिन को शुभ, सार्थक बनाने के लिए धनाद्यैश्वर्यों की पवित्रता, सत्कार्यों में

कुशलता और प्रीति, परोपकार, दान, यज्ञादि पवित्र कार्यों के अनुष्ठान के निमित्त ऐश्वर्य की वृद्धि, शारीरिक स्वास्थ्य, मधुरवाणी अथवा शुद्ध सात्विक भोजन होना अनिवार्य है। तभी हमारा दिन सुदिन होगा।

वसिष्ठं ह वरुणो नाव्याधाद्दृषिं चकार स्वपा महोभिः।
स्तोतारं विप्रः सुदिनत्वे अह्नां यन्नु द्यावस्ततनन्नादुषासः।।

(ऋ. ७.८८.४)

(वरुणः वसिष्ठं नावि ह आधात्) वरणीय आचार्य उनके आधीन वसने वाले ब्रह्मचारी शिष्य को भवसागर से पार उतारने वाली वेदज्ञान रूपी नौका में अवश्य स्थापित करें। वह स्वयं (स्वपाः महोभिः वसिष्ठं ऋषिं चकार) उत्तम कर्मशील, सदाचारी होकर बड़े-बड़े गुणों से उत्तम ब्रह्मचारी को मन्त्रार्थ के दर्शन में समर्थ विद्वान् बनावें। (विप्रः अह्नां सुदिनत्वे यात् द्यावा नु यात् उषासः नु स्तोतारं ततनन्) मेधावी आचार्य दिनों को शुभ, मंगलकारी बनाने के लिए आये दिनों एवं आयी रातों में भी अध्ययनशील शिष्य को और अधिक ज्ञानवान् बनावें अर्थात् ज्ञानार्जन से ही मनुष्य के दिन उज्ज्वल हो सकते हैं, अन्यथा नहीं।

इमां मे अग्ने समिधं जुषस्वेळस्पदे प्रति हर्या घृताचीम्।
वर्ष्मन्पृथिव्याः सुदिनत्वे अह्नामूर्ध्वो भव सुक्रतो देवयज्या।।

(ऋ. १०.७०.१)

ईश्वर उपदेश दे रहे हैं कि (अग्ने! मे इमां समिधं जुषस्व) हे प्रगतिशील जीव! तू मेरी इस वेदज्ञान के रूप में दी गई ज्ञानदीप्ति को प्रीति एवं श्रद्धापूर्वक ग्रहण कर। (इळस्पदे घृताचीम् प्रतिहर्य) वेद ज्ञान की प्राप्ति के निमित्त तू अपने अन्तःकरण में व्याप्त मोहादि अज्ञानों को नष्ट कर। (सुक्रतो! पृथिव्याः वर्ष्मन् अह्नां सुदिनत्वे देवयज्या उर्ध्वो भव) हे उत्तम प्रज्ञा वा उत्तम कर्मवाले जीव! तू इस धरातल पर अपने जीवन के दिनों को सुदिन व दिव्य बनाने के लिए देवयज्ञ, व्रत, तप, पुरुषार्थ आदि के द्वारा जागृत हो जाओ,

अज्ञान में व सोने में ही मत रहना। सोने वाले व अज्ञानियों के दिन कभी सुदिन नहीं हो सकते।

आ तेन यातं मनसो जवीयसा रथं यं वामृभवश्चक्रुरश्विना।
यस्य योगे दुहिता जायते दिव उभे अहनी सुदिने विवस्वतः॥
(ऋ.१०.३९.१२)

हे (अश्विना) सुशिक्षित जितेन्द्रिय स्त्रीपुरुषो! (वाम् यं रथम् ऋभवः चक्रुः) तुम दोनों जिस दिव्य रथ को ऋभुलोग (ऋभु तीन हैं- १. ऋभु अर्थात् सत्यज्ञान से परिपूर्ण व्यक्ति २. विभ्वन्-व्यापक हृदयवान् व विशाल मन-मस्तिष्क वाला व्यक्ति, ३. वाज- जिसका शरीर सम्पूर्ण रूप से शक्तिशाली हो, इन तीन गुणों से युक्त विद्वान् लोग) उपदेश करते हैं (तेन मनसः जवीयसा आयातम्) मन के बल से चलायमान उस रथ से मोक्षप्राप्ति के निमित्त आ जाओ, सन्नद्ध हो जाओ (यस्य योगे दिवः दुहिता जायते) जिससे सम्बन्ध होने पर इसमें तत्वज्ञान को पूर्ण करने वाली वेदवाणी आविर्भूत हो जाती है। तब (विवस्वतः उभे अहनी सुदिने) सूर्य के कारण उत्पन्न दोनों रात-दिन अर्थात् प्रत्येक दिन तुम्हारे लिए शुभ दिन ही होते हैं, सुख, शान्ति और आनन्द को लाने वाले होते हैं।

त्वामीळते अजिरं दूत्याय हविष्मन्तः सदमिन्मानुषासः।
यस्य देवैरासदो बर्हिरग्नेऽहान्यस्मै सुदिना भवन्ति॥(ऋ. ७.११.२)

हे (अग्ने) ईश्वर! (हविष्मन्तः मानुषासः दूत्याय सदम् इत् अजिरं त्वाम् ईळते) सतत् यज्ञ के करने वाला मननशील मनुष्य दूत कर्म के लिए अर्थात् ज्ञान का सन्देश प्राप्त करने के लिए सदा ही पवित्र एवं उन्नति कराने वाले तुम्हारी उपासना करते हैं। (यस्य बर्हिः देवैः आसदः) जिसके आसन पर अर्थात् निर्मल अन्तःकरण में आप देवों के साथ विराजमान होते हैं (अस्मै अहानि सुदिना भवन्ति) ऐसे व्यक्ति के लिए सभी दिन शुभ (आह्लादक) दिन ही होते हैं।

स ते जानाति सुमतिं यविष्ठ य ईवते ब्रह्मणे गातुमैरत्।
विश्वान्यस्मै सुदिनानि रायो द्युम्नान्यर्यो वि दुरो अभि द्यौत्॥
(ऋ.४.४.६)

(यविष्ठ) हमारी बुराइयों को दूर कर अच्छाइयों को मिलाने वाले हे प्रभो! (य ईवते ब्रह्मणे गातुम् ऐरत्) जो जगत् को संचालन करने वाली शक्ति के स्वामी महान् परमेश्वर को प्राप्त करने के मार्ग को उपदेश करता है (स ते सुमतिं जानाति) वह तेरे उत्तम ज्ञान को जानता है। (अस्मै विश्वानि सुदिनानि) ऐसे विद्वान् के लिए उसके सभी दिन शुभ दिन ही होते हैं। और उसको (रायः द्युम्नानि) सर्वविध ऐश्वर्य एवं यश वा ज्ञान की प्रतिभा प्राप्त होती है। (अर्य दुरः वि अभिद्यौत्) इन्द्रियों का स्वामी होता हुआ सब इन्द्रिय द्वारों को विशिष्ट रूप से प्रदीप्त करने वाला होता है।

सेदग्ने अस्तु सुभगः सुदानुर्यस्त्वा नित्येन हविषा य उक्थैः।
पिप्रीषति स्व आयुषि दुरोणे विश्वेदस्मै सुदिना सासदिष्टिः।
(ऋ. ४.४.७)

हे (अग्ने) परमेश्वर!(यः नित्येन हविषा य उक्थैः त्वा स्वे आयुषि दुरोणे पिप्रीषति) जो प्रतिनित्य यज्ञ की हवियों के द्वारा स्तुतियों के द्वारा आपको अपने जीवन में एवं शरीर रूपी घर में प्रसन्न करने का यत्न करता है। (स इत् सुभगः सुदानुः अस्तु) वही बड़े सौभाग्यशाली तथा उत्तम दानशील हो। (अस्मै विश्वा इत् सुदिना)उसके ही सब दिन सुखकारक एवं शुभ दिन होते हैं। (सा इष्टिः असद्) उसके ही यज्ञ सफल होते हैं।

अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते सं भ्रातरो वावृधुः सौभगाय।
युवा पिता स्वपा रुद्र एषां सुदुघा पृश्निः सुदिना मरुद्भ्यः॥
(ऋ. ५.६०.५)

(एते अज्येष्ठासः अकनिष्ठासं भ्रातरः सौभागाय सं वावृधुः) ये मनुष्य परस्पर छोटे-बड़े, ऊँच-नीच आदि भेदों से रहित होकर भाइयों के समान एक दूसरे का भरणपोषण करते हुए सौभाग्य अर्थात् उत्तम ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए मिलकर आगे बढ़ें, उन्नति को प्राप्त करें। इसके लिए प्रत्येक व्यक्ति (पिता) आवश्यक कर्तव्यों का पालन करने वाला (युवा) स्वस्थ एवं बलशाली स्वपा (सु+अपाः) उत्तम कर्मों को करता हुआ अपने परिजनों की रक्षा करता हुआ (रुद्रः) बाह्य एवं आन्तरिक सभी विघ्नों एवं आसुरी भावों को नष्ट करने वाला (मरुद्भ्यः) इन वायु के समान बलवान् एवं पुरुषार्थियों के लिए (पृश्निः सुदुघा) सूर्य, आकाश, पृथिवी और पुष्टिकारक दूधादि पदार्थों को देने वाली गौवें होवें (एषां सुदिना) ऐसे व्यक्तियों के अर्थात् कर्तव्यनिष्ठ व्यक्तियों के ही दिन सुदिन होते हैं।

अभी तक हमने वेदमंत्रों के माध्यम से जाना कि वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक स्तर पर मानसिक एवं आत्मिक सुख-शान्ति को प्राप्त करने की साधना में ही शुभत्व निहित है। शुभकर्मों के बिना शुभ परिणामों अर्थात् सुखों को चाहने वालों को उद्दिष्ट कर उपनिषत्कार कहते हैं कि-

यदा चर्मवदाकाशं वेष्टयिष्यन्ति मानवाः।
तदा देवमविज्ञाय दुःखस्यान्तो भविष्यति॥ (श्वेताश्वतरोप.६.२०)

सत्कर्मों को न करने वाले, मोक्षमार्ग पर न चलने वाले को सुख वा शुभ प्राप्त होना वैसा ही असंभव है, जैसे कि आकाश को चर्म, चटाई आदि के समान गोल-गोल लपेटना असंभव है।

- निगमनीडम्-वेदगुरुकुलम्
पिडिचेड, गज्वेल, मेदक (आन्ध्रप्रदेश) ५०२२७८

इम्यूनोथेरेपी- कैंसर का करारा जवाब

कैंसर को हमेशा से मानव स्वास्थ्य के लिए एक खतरा समझा जाता है, लेकिन दुनिया भर के कैंसर रिसर्च और वैज्ञानिक इसके समुचित इलाज के लिए प्रयासरत हैं। इसलिए पिछले २० सालों की कड़ी मेहनत के बाद कैंसर रिसर्च इस नतीजे पर पहुँचते हैं कि कैंसर के इलाज में सर्जरी, कीमोथेरेपी और रेडियोथेरेपी के साथ-साथ इम्यूनोथेरेपी को भी शामिल किया जाए। तभी तो प्रतिष्ठित अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिका साइन्स ने इम्यूनोथेरेपी को सन् २०१३ की सर्वाधिक महत्वपूर्ण खोज घोषित किया है।

क्या है इम्यूनोथेरेपी

यह एक प्रकार की जैविक थेरेपी है। इस थेरेपी में या तो शरीर के इम्यूनसिस्टम (रोग प्रतिरोधक तंत्र) की क्षमता को टी-सेलथेरेपी द्वारा बढ़ाया जाता है या फिर शरीर में विशेष प्रकार के एंटीबॉडीज (यहाँ आशय प्रोटीन) का प्रवाह किया जाता है जो कैंसर सेल्स को निष्क्रिय कर देते हैं।

क्या है टी सेलइम्यूनोथेरपी

साधारण तौर पर टी-सेल्स शरीर के रक्षाकवच की तरह काम करती हैं। ये कैंसर सेल्स को नियमित रूप से नष्ट करती रहती हैं। शरीर की इसी क्षमता का इस्तेमाल टी-सेल थेरेपी में किया जाता है।

लाभ-टी सेलथेरेपी के कुछ प्रमुख लाभ इस प्रकार है

१. कीमोथेरेपी से बेहतर राहत प्रदान करती है।

२. शरीर में कैंसर फैलने मेटास्टैसिस के बाद जब रोगी पर कीमोथेरेपी या रेडियोथेरेपी कारगर नहीं होती, तो इस स्थिति में टी-सेल थेरेपी द्वारा पीड़ित व्यक्ति का जीवनकाल बढ़ाया जा सकता है।

३. इस थेरेपी का शरीर पर कोई साइडइफेक्ट नहीं पड़ता।

४.कीमोथेरेपी के साथ इस थेरेपी का भी प्रयोग किया जा सकता है ताकि कैंसर को बेहतर ढंग से नियंत्रित किया जा सके।

५.सर्जरी से पहले या इसके बाद भी इस थेरेपी की शुरूआत की जा सकती है।

कहाँ प्रभावी है टी सेलथेरेपी

यह थेरेपी विभिन्न प्रकार के ब्लड कैंसर ल्यूकीमिया लिम्फोमा, ब्रेस्ट कैंसर और प्रोस्टेट कैंसर में प्रभावी है। टी-सेलथेरेपी के प्रभाव के मद्देनजर अमेरिकन (एफडीए फूड एंड ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन) ने प्रोस्टेट कैंसर के ऐसे रोगियों जिनमें यह बीमारी तेजी से फैल चुकी है और सभी उपचार विफल हो गए हैं के लिए टी-सेलथेरेपी के प्रयोग को मान्यता प्रदान की है। हाल में टाटा कैंसर हॉस्पीटल, मुम्बई के चिकित्सकों द्वारा की गई एक रिसर्च के अनुसार ब्रेस्ट कैंसर के रोगी जिनमें कैंसर शरीर के अन्य भागों में फैल गया है और जिन्हें सर्जरी और रेडियोथेरेपी से किसी प्रकार का फायदा नहीं होता है, इस स्थिति में ही टी-सेलथेरेपी और भी प्रासंगिक हो जाती है। ऐसा इसलिए क्योंकि ब्रेस्ट कैंसर का पता लगने तक ५ से २० प्रतिशत रोगियों में कैंसर मेटास्टैसिस शरीर में फैलना हो चुका होता है।

अन्तर्राष्ट्रीय विशेषज्ञों की राय

अमेरिका के मेरीलैंड स्थित नेशनल कैंसर इंस्टिट्यूट के डॉ. रेस्टिफो और डडले की नवनीनतम रिपोर्ट के अनुसार टी-सेलथेरेपी से मेटास्टेटिक कैंसर को नियंत्रित करने के साथ-साथ कुछ मामलों में कैंसर का समूल रूप से खात्मा भी किया जा सकता है। सन् २०१३ में अमेरिकन एकेडमी ऑफ कैंसर रिसर्च के जर्नल में प्रकाशित डॉ. जेम्स ही और एन्टोनी के लेख में टी-सेलथेरेपी के लम्बे प्रयोग की मेलेनोमा त्वचा के इलाज के मामलों में सलाह दी गई है। इसी तरह अमेरिका की पेन्सिलवानिया यूनिवर्सिटी की डॉ. लाना ने टी-सेलथेरेपी और डेन्ड्राईटिक सेल वैक्सीन द्वारा ओवेरियन कैंसर में अभूतपूर्व परिणामों को बीते दिनों तक कांफ्रेन्स में पेश किया तथा न्यूयार्क स्थित मेमोरियल स्लोनकैटरिंग कैंसर सेन्टर के डॉ. नैयर रिजवी के अनुसार लंग कैंसर के ऐसे रोगी जिनमें ८५ प्रतिशत में डायग्नोसस के समय कैंसर फैल चुका होता है, उनके इलाज में एडॉप्टिव टी-सेलथेरेपी की महत्वपूर्ण भूमिका है। कैंसर की भयावहता के मद्देनजर समाज के सभी वर्गों को इस रोग के इलाज में सहयोग देना चाहिए। इसी भावना को ध्यान में रखते हुए कॉरपोरेट सोशल रेस्पॉन्सिबिलिटी के अन्तर्गत सार्थक पहल शुरू हुई है। जैसे मुम्बई स्थित नानावती एचसीजी कैंसर सेन्टर और बैंगलोर स्थित डाईपोनबॉयो इंटेलीजेन्स ने मिलकर चयन किए गए निर्धन रोगियों को मुफ्त टी-सेलथेरेपी की सुविधा देने का निर्णय लिया है।

डॉ. बी. एस. राजपूत
क्रिटीकेयर हॉस्पीटल, जुहू (मुम्बई)

साभार- आपका स्वास्थ्य

समाचार

आकांक्षा यादव होंगी सर्वोच्च पुरस्कार से सम्मानित

प्रसिद्ध ब्लॉगर-लेखिका आकांक्षा यादव (इलाहबाद) को वर्ष २०१५ के लिए सार्क देशों में दिए जाने वाले शीर्ष सम्मान 'परिकल्पना सार्क शिखर सम्मान' के लिए चयनित किया गया है। उन्हें आगामी २३ से २७ मई २०१५ को श्रीलंका में आयोजित पंचम अन्तर्राष्ट्रीय ब्लॉगर सम्मेलन में सम्मानित किया जायेगा। इन्हें सम्मान पत्र के साथ इक्कीस हजार रु. की धनराशि प्रदान की जायेगी। आंकाक्षा यादव गत २००८ से ब्लॉग जगत् की सक्रिय सदस्या हैं और ज्वलन्त विषयों पर प्रमुख रचनाधर्मी के रूप में जानी जाती हैं। श्रीमती आकांक्षा यादव को उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव द्वारा 'श्री अवध सम्मान' से सम्मानित किया जा चुका है। इनको तथा इनके पति प्रसिद्ध ब्लॉगर व निदेशक, डाक सेवाएँ, भारत सरकार, श्री कृष्ण कुमार यादव को 'दशक के श्रेष्ठ ब्लॉगर दम्पत्ति' का सम्मान दिया जा चुका है। ज्ञातव्य है कि श्री कृष्ण कुमार यादव और श्रीमती आकांक्षा यादव दोनों ही सत्यार्थ सौरभ के लिए अपनी विचारोत्तेजक रचनाएँ प्रेषित करते हैं। श्रीमती यादव को सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से अनेकशः बधाई एवं शुभकामनाएँ।

- अशोक आर्य

वेद पारायण यज्ञ का रजत जयन्ती महोत्सव

प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डॉ. सोमदेव शास्त्री द्वारा अपने गाँव नैनोरा (जिला-मन्दसौर) में गत २४ वर्षों से निरन्तर वेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया जाता रहा है तथा इसी क्रम में १६ से २० मई २०१५ में पूज्य स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में वेद पारायण यज्ञ का रजत जयन्ती महोत्सव मनाया जा रहा है। इस अवसर पर यज्ञ के ब्रह्मा डॉ. जयेन्द्र आचार्य, गुरुकुल नोएडा होंगे। इनके अतिरिक्त स्वामी आर्यवेश जी, दिल्ली, स्वामी धर्मानन्द जी, उड़ीसा तथा स्वामी सुमेधानन्द जी (सांसद) मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहेंगे एवं श्री मिठाई लाल सिंह, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई, श्री अरुण अवरोल, मंत्री-आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई, आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय, डॉ. वेद प्रकाश, डॉ.महावीर मीमांसक, डॉ. रघुवीर वेदालंकार, डॉ. ज्वलन्त कुमार, डॉ. वेदपाल, डॉ. प्रशस्य मित्र, डॉ.दीनानाथ शास्त्री, डॉ. रवीन्द्र, डॉ. सीमा श्रीमाली, डॉ. पवित्रा वेदालंकार, आचार्य मोक्षराज, श्री जीववर्द्धन शास्त्री, श्री संजय सत्यार्थी, आचार्या सूर्या देवी, आचार्या प्रियवंदा, डॉ.सुभाष वेदालंकार आदि अनेक विद्वानों व भजनादेपदेशकों को आमंत्रित किया गया है।

बहुत कम उपदेशक ऐसे हैं जो अपनी आय में से नियमित रूप से एक भाग निकाल कर इस प्रकार के आयोजनों को गत पच्चीस वर्षों से निरन्तर मूर्त रूप दे रहे हैं। डॉ. सोमदेव जी के द्वारा किए गए इन वेद पारायण यज्ञों के कारण ही नैनोरा और इसके आसपास के सैंकड़ों किलोमीटर के क्षेत्र में वैदिक धर्म के प्रति अनेक श्रद्धालु अस्तित्व में आये हैं। डॉ. सोमदेव जी निश्चित रूप से साधुवाद के पात्र हैं। सत्यार्थ सौरभ परिवार परमपिता परमात्मा से इनके निरामय दीर्घायुष्य की प्रार्थना करता है ताकि दीर्घ समय तक ऐसे कर्तव्यनिष्ठ वेदविद् आर्य समाज की सेवा करते रहें। - अशोक आर्य

डॉ. सोमदेव शास्त्री सम्मानित

प्रसिद्ध वैदिक विद्वान्, ओजस्वी वक्ता व विख्यात् लेखक डॉ. सोमदेव शास्त्री को आर्य जगत् में उनकी महती सेवाओं को ध्यान में रखते हुए एक समारोह के अन्तर्गत मुम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान माननीय बाबू मिठाई लाल सिंह जी ने पच्चीस हजार रु. की पुरस्कार राशि से सम्मानित किया। डॉ. सोमदेव शास्त्री को इस अवसर पर न्यास परिवार व सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से बधाई व शुभकामनाएँ।

अलवर में भव्य शोभा यात्रा

आर्य कन्या विद्यालय समिति, अलवर के तत्वावधान में महर्षि दयानन्द सरस्वती के १९१ वें जन्मदिवस समारोह के शुभ अवसर पर १४ फरवरी २०१५ को भव्य शोभा यात्रा नगर के प्रमुख मार्गों से होकर निकाली गई। जिसमें सहस्रों की संख्या में छात्राओं एवं नगर के गणमान्य लोगों ने भाग लिया। शोभा यात्रा में पाँच अश्वों पर भारत की वीरांगनाओं के रूप में छात्राएँ विराजी हुई थीं। अनेक झांकियाँ शोभायात्रा में दर्शायी गईं।

महात्मा चैतन्य मुनि सम्मानित

आर्य जगत् के वरिष्ठ साहित्यकार एवं वैदिक प्रवक्ता व आनन्द धाम आश्रम उधमपुर, जम्मू कश्मीर के मुख्य संरक्षक व निदेशक महात्मा चैतन्य मुनि जी को भुवनेश्वर उड़ीसा में 'महर्षि दयानन्द सरस्वती सम्मान' से सम्मानित किया गया। उन्हें यह सम्मान लाला लाजपतराय जी द्वारा स्थापित लोक सेवक मंडल के राष्ट्रीय सचिव श्री दीपक मालव्य द्वारा प्रदान किया गया। महात्मा जी को साहित्य अकादमी सहित अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है।

स्वामी (डॉ.) ओम् आनन्द सरस्वती का जन्मोत्सव मनाया गया

संन्यासी साहित्यकार स्वामी (डॉ.) ओम् आनन्द सरस्वती जी का जन्मोत्सव १५ मार्च २०१५ को पद्मिनी आर्ष कन्या गुरुकुल, चित्तौड़गढ़ में मनाया गया जिसमें मुख्य अतिथि डॉ. आनन्दी लाल जैन, अध्यक्ष श्री राजीव शर्मा, मुम्बई एवं विशिष्ठ अतिथि श्री तेजपाल सिंह हुड्डा के सान्निध्य में आचार्य अखिल विनय के अभिनन्दन ग्रन्थ 'अखिल विनय-साहित्य तपस्वी' का भी विमोचन किया गया एवं काव्य संगोष्ठी का आयोजन किया गया। न्यास व सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से पूज्य स्वामी जी को जन्म दिन की अनेकशः शुभकमानाएँ। हम सभी प्रभु से आपके निरामय दीर्घायुष्य की प्रार्थना करते हैं।

हलचल

पुरोहित प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से आर्य समाज कांकरिया, अहमदाबाद में सम्पूर्ण गुजरात के वैदिक पुरोहितों को एक सूत्र में लाने एवं विवाहादि सोलह संस्कारों में एकरूपता लाने हेतु चिन्तन शिविर रखा गया। जिसकी अध्यक्षता गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल ने की एवं सभा के महामंत्री श्री हंसमुख भाई परमार ने कार्यक्रम का संचालन व मार्गदर्शन किया। गुजरात विश्वविद्यालय के प्रोफेसर श्री कमलेश कुमार शास्त्री मुख्य अतिथि एवं मार्गदर्शक थे। कार्यक्रम में दिवाकर शास्त्री, वेदबन्धु शास्त्री, गिरीश शर्मा, कृष्णकान्त व वीर बहादुर शास्त्री का विशेष योगदान रहा।

वेद वेदांग सम्मेलन

वैदिक मिशन मुम्बई के तत्वावधान में २१ व २२ मार्च २०१५ को आर्य समाज, सांताक्रुज मुम्बई में वेद वेदांग सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता स्वामी प्रणवानन्द जी ने की एवं मुख्य अतिथि बाबू मिठाई लाल सिंह जी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई थे। इस अवसर पर आर्य समाज न्यूयार्क के प्रधान श्री चन्द्रभानु जी आर्य एवं आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के पूर्व प्रधान डॉ. रमेश गुप्ता भी उपस्थित थे। समारोह में स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती, स्वामी धर्मेशानन्द जी, श्री अरुण अवरोल जी, डॉ. महावीर मीमांसक एवं अन्य अनेक विद्वानों, भजनोपदेशकों एवं आर्य नेताओं ने भाग लिया।

होली मंगल मिलन समरोह सम्पन्न

आर्य समाज, प्रतापनगर दिल्ली में होली मंगल मिलन समरोह सम्पन्न हुआ। जिसमें सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी एवं केन्द्रीय आर्य युवक परिषद दिल्ली के अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य उपस्थित थे। स्वामी आर्यवेश जी ने इस अवसर पर उपस्थित आर्यों को सम्बोधित किया।

- अनिल आर्य

ऋषि जन्म एवं बोध-दिवस समारोह

१५ फरवरी को आर्यसमाज मानसरोवर, जयपुर का साप्ताहिक सत्संग ऋषि दयानन्द के जन्म एवं बोध पर्व को समर्पित रहा। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. सन्दीपन आर्य ने किया। उन्होंने स्वामी जी के त्याग, तप व कृतित्व को प्रभावोत्पादक रूप में संदर्भित किया। डॉ. कृष्णपाल सिंह ने मुख्य वक्ता के रूप में ऋषि जीवन के ऐसे प्रकरण प्रस्तुत किए जो अति महत्व के और अनछुए भी थे।

- ईश्वर दयाल माथुर, उपप्रधान

प्रतिस्वर

श्रीमान् अशोक जी आर्य, सप्रेम नमस्ते।

आपका सत्यार्थ सौरभ फरवरी २०१५ को प्राप्त हुआ। इसमें सत्यार्थ प्रकाश पहेली-१३ (पृष्ठ संख्या-१३) देखी और सत्यार्थप्रकाश को बार-बार पढ़ा और रिक्त स्थान भरा। मुझे इस बात की खुशी है, यह आप की बहुत बड़ी पहल है। इससे सत्यार्थप्रकाश को लोग पढ़ेंगे। मैंने भी बार-बार पढ़कर सही रिक्त स्थान भरने का प्रयास किया है। मेरी उम्र ६८ वर्ष हो चुकी है। इस प्रयास के लिये आपको बार-बार धन्यवाद दे रहा हूँ।

- किशनाराम आर्य बीलू, मकराना

होलिकोत्सव आयोजित

प्रमुख पर्वों को आर्य समाज से बाहर आमजनों के बीच में मनाने की योजना के अन्तर्गत आर्यसमाज, हिरणमगरी, उदयपुर द्वारा शीतला माता पार्क विकास समिति, उदयपुर के सहयोग से फाल्गुनी नवसष्येष्टी पर्व के अवसर पर पंचकुण्डीय यज्ञ का आयोजन श्री इन्द्रप्रकाश यादव एवं श्री अनन्त देव शर्मा के ब्रह्मत्व में किया गया। स्वागत उद्बोधन आर्यसमाज हिरणमगरी, उदयपुर के प्रधान भँवर लाल आर्य द्वारा दिया गया। श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य ने पर्व की प्रासंगिकता व पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालते हुए हिरण्यकशिपु व प्रह्लाद के आख्यान को विवेचित करते हुए अग्निहोत्र के महत्व को स्थापित किया व रामायण के अनेक प्रसंगों को प्रस्तुत करते हुए तत्कालीन समय में घर-घर में अग्निहोत्र किया जाता था, इस पर प्रकाश डालते हुए नगर निगम, उदयपुर की पार्षद श्रीमती सीमा साहू के माध्यम से यह निवेदित किया कि प्रमुख अवसरों पर नगर के सभी पार्कों में अग्निहोत्र के आयोजन किए जाने चाहिए। आर्यसमाज हिरणमगरी की मंत्री श्रीमती ललिता मेहरा एवं शीतलामाता पार्क विकास समिति की उपाध्यक्ष श्रीमती कौशल्या देवी ने सभी का आभार व्यक्त किया। सफल संचालन श्री भूपेन्द्र शर्मा ने किया।

- भंवर लाल आर्य, प्रधान

सत्यार्थ प्रकाश पहेली - १३ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली के संदर्भ में हमें उत्साहजनक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हो रही हैं। **सत्यार्थ प्रकाश पहेली- १३** के चयनित १० विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- ठा. गोवर्धन सिंह राठौर, अजमेर (राज.), श्री किशनराम आर्य, नागौर (राज.), दिया सिंह, बीकानेर (राज.), डॉ. रामफल आर्य, पोलवास (हरि.), श्री ब्रह्मचारी उत्तम आर्य, आबू पर्वत (राज.), ठा. रघुवीर सिंह सोलंकी, भीलवाड़ा (राज.), कर्नल गोविन्द सिंह चुण्डावत, अजमेर (राज.), मृदुला विद्यार्थी, पूणे (महाराष्ट्र), श्रीमती रानू शालीन टुवानी (माहेश्वरी), इन्दौर (म.प्र.), श्री मुकेश पाठक, उदयपुर (राज.)। इनको स्वयं को अथवा इनके द्वारा नामित भाई/बहिन को १ वर्ष तक सत्यार्थ सौरभ पत्रिका निःशुल्क भेजी जावेगी।

सत्यार्थ-पीयूष

वानप्रस्थाश्रम के कर्त्तव्य

गतांक से आगे .....

वानप्रस्थ का काल

ब्रह्मचर्याश्रमं समाप्य गृही भवेत्, गृही भूत्वा प्रव्रजेत्।

– (शत. का. १४)

मनुष्यों को उचित है कि ब्रह्मचर्याश्रम को समाप्त करके गृहस्थ होकर वानप्रस्थ और वानप्रस्थ होके संन्यासी होवें। अर्थात् यह अनुक्रम से आश्रम का विधान है।

– (सत्यार्थ प्रकाश पंचम समुल्लास)

गृहस्थस्तु यदा पश्येद्वलीपलितमात्मनः।
अपत्यस्यैव चापत्यं तदाऽरण्यं समाश्रयेत्॥ (मनु. ६/२)

महर्षि मनु याज्ञवल्क्य तथा कुल्लूक आदि स्मृतिकारों एवं टीकाकारों के अनुसार 'पच्चास वर्ष' की अवस्था पूर्ण करके जब पुत्र को पुत्रोत्पति हो जावे तथा सिर के बाल श्वेत हो जावें तो वन की राह लें। संस्कार विधि के वानप्रस्थ प्रकरण में महर्षि दयानन्द महाराज ने लिखा है कि 'वानप्रस्थ करने का समय ५० वर्ष के उपरान्त है। जब पुत्र का भी पुत्र हो जावे, तब अपनी स्त्री, पुत्र, भाई, बन्धु, पुत्रवधु आदि को सब गृहाश्रम की शिक्षा करके वन की ओर यात्रा की तैयारी करे।' मनुष्य को शतायु मान, आश्रमों के आयु विभाजन के अनुसार २५-२५ वर्ष के चार भाग किए हैं उस क्रम में वानप्रस्थाश्रम ५० वर्ष की अवस्था के उपरान्त ही है।

किन्तु यह मान्यता सर्वत्र उपयुक्त नहीं हो सकती क्योंकि ४८ वर्ष तक ब्रह्मचर्य पालन करने वाला आदित्य ब्रह्मचारी ५० वर्ष में वानप्रस्थ कैसे हो सकता है। परन्तु २५ वर्ष की अवस्था में गृहस्थ में प्रविष्ट होने वाले के लिए यह काल उपयुक्त माना जा सकता है। इसीलिए गृहस्थ जब शरीर पर झुर्रियाँ देखे तथा पुत्र का भी पुत्र हो जाए यह मनु की मान्यता अधिक उचित प्रतीत होती है। इस प्रकार वानप्रस्थ ग्रहणकाल पौत्र उत्पत्ति के ठीक पश्चात् मानना उचित है, चाहें आयु ५० या इससे कम ज्यादा ही क्यों न हो।

वानप्रस्थ और पत्नी

'वानप्रस्थ धर्म का पालन करने के लिए तपोवन में जाता हुआ मनुष्य, पत्नी को या तो पुत्र के संरक्षण में छोड़ सकता है या अपने साथ ले जा सकता है।'

पुत्रेषु भार्यां निक्षिप्य वनं गच्छेत्सहैव वा॥ (मनु. ६/३)

वानप्रस्थियों के कर्त्तव्य

महर्षि मनु ने वानप्रस्थियों के निम्न कर्त्तव्य बतलाये हैं-

१. मृगचर्म या वल्कल पहने, सायं और प्रातः स्नान करे, जटा, दाढ़ी मूँछ तथा नाखूनों को सदा साफ रखे।

२. खाद्य पदार्थों में से अपनी शक्ति अनुसार बलि (प्राणियों को भोजन और भिक्षा) दे।

३. वन में वेदों का अध्ययन-अध्यापन करे और यदि स्त्री हो तो भी विषय सेवन न करे।

४. नियमानुसार वैतानिक यज्ञ करे।

५. फल-फूल, मूल का भोजन करे और शराब आदि मादक पदार्थों का सेवन न करे।

६. शरीर के सुख के लिए अति प्रयत्न न करे तथा अपने आश्रित व स्वकीय पदार्थों से ममता न करे।

७. नाना प्रकार की उपनिषद् तथा श्रुतियों के अर्थों का विचार किया करे।

८. वानप्रस्थाश्रमी वेदाभ्यास तथा प्रणव का ध्यान करता हुआ ब्रह्मनिष्ठ होवे।

वानप्रस्थ तथा भिक्षा

तपः श्रद्धे....'भैक्षचर्या चरन्तः (मुण्ड. १/२/११) के अनुसार वानप्रस्थ को भिक्षाचरण करते हुए वन में रहना चाहिए। इससे पूर्व मनु (६/८) में 'अनादाता' पद का अर्थ 'किसी से कुछ भी पदार्थ न लेवे' ऐसा किया है। इस प्रतीयमान परस्पर विरोध का समाधान यह हो सकता है कि वानप्रस्थ को किसी से कुछ न लेना चाहिए', यह सामान्य नियम है। विशेष अवस्था में आपद्धर्म के रूप मे भिक्षा ली जा सकती है, परन्तु यह भिक्षा भी वनवासियों से ली जानी चाहिए, ग्राम या नगरवासियों से नहीं-

तापसेष्वेव विप्रेषु यात्रिकं भैक्षमाहरेत्।
गृहमेधिषु चान्येषु द्विजेषु वनवासिषु॥ (मनु. ६/२७)

जो पढ़ाने और योगाभ्यास करनेहारे तपस्वी, धर्मात्मा, विद्वान् लोग जंगल में रहते हों और जो गृहस्थ वा वानप्रस्थ वनवासी हों, जीवन यात्रा चलाने योग्य भिक्षा उन्हीं के घरों में ग्रहण करें। यह श्लोक वानप्रस्थ संस्कार में संस्कारविधि में भी उद्धृत है।

इस श्लोक पर कुल्लूक भट्ट अपनी टीका में कहते हैं- **'फलमूलासम्भवे च वानप्रस्थेभ्यो ब्राह्मणेभ्यः प्राणमात्रधारणोचितं भैक्षमाहरेत् तदभावे चान्येभ्यो गृहस्थेभ्यो द्विजेभ्यः,**

अर्थात् वानप्रस्थ को जंगली फल-मूल न मिल सकें और प्राण संकट में हो तभी वानप्रस्थ के योग्य भिक्षा तपस्वी वनवासियों, **वानप्रस्थों से लेवे, उनसे भी न मिले तो अन्य वनवासी गृहस्थ द्विजों से लेवे। बहुत ही संकट की स्थिति में मनु का आदेश है- 'ग्रामादाहृत्य वाऽश्नीयादष्टौ ग्रासान्वने वसन्' अर्थात् यदि वन में भिक्षा न मिले तो ग्राम से भिक्षा लाकर खाये, किन्तु आठ ग्रास से अधिक नहीं।** तात्पर्य यह कि अत्यन्त आवश्यक होने पर मात्र उदरपूर्ति के लिये भिक्षा द्वारा भोजन करें। **संग्रह यह कि अत्यन्त आवश्यक होने पर मात्र उदरपूर्ति के लिये भिक्षा द्वारा भोजन करें। संग्रह के लिये नहीं।** (साभार- सत्यार्थ भास्कर)

क्रमशः ..... **सम्पादक- अशोक आर्य, नवलखा महल**

कथा सरित

सेवा और सच्चाई से जीवन की सार्थकता

प्रायः हम किसी बड़े पद पर पहुँच जाना जीवन की सार्थकता समझते हैं किन्तु जीवन की सार्थकता पद या अधिकार में नहीं अपितु सेवा और सत्यता के आचरण में है। ऐसा व्यक्ति वास्तव में सम्मान का अधिकारी होता है और अन्त में विजय उसी की होती है। विद्वान् राज्यमंत्री भद्रजित का उदाहरण यहाँ दिया गया है।

राजा बालीक एक कुशल एवं न्यायप्रिय शासक थे। वह प्रजाहित को अपने जीवन का सर्वप्रमुख और महत्वपूर्ण कार्य समझते थे। राजा की प्रशस्ति का कारण उनके विद्वान् मंत्री भद्रजित की कुशलता थी। मंत्री राजा को जनता के हित में कार्य करने के लिए उचित परामर्श देते रहते थे। एक राज्य कर्मचारी मंत्री भद्रजित से ईर्ष्या करता था। भद्रजित द्वारा जनहित में मुक्त हस्त व्यय के प्रति उसने उन पर आरोप लगाया कि भद्रजित ने जनहित का बहाना करके राजकोष का

दुरुपयोग किया है। राजा को आरोप सुनकर आश्चर्य हुआ किन्तु बार-बार ऐसी शिकायत आने पर एक दिन क्रोध में राजा ने मंत्री भद्रजित को तत्काल मंत्री पद से हटा दिया और कहा अब तुम्हें अपनी औकात का पता लग जायगा। कोई दो कौड़ी के लिए भी नहीं पूछेगा। भद्रजित ने राजा के आदेश का बुरा न मानकर विनम्रता से कहा- आपने आज मुझे पद से हटाकर मेरे परलोक के कल्याण की बाधा दूर कर दी है। मैं सदैव आपकी इस कृपा के लिए आभारी रहूँगा। यह कहकर प्रसन्नवदन भद्रजित अपने घर लौट गया।

भद्रजित पूरे राज्य में सद्गृहस्थ सन्त के रूप में विख्यात थे। अब तक वह राजकोष से जनता की सेवा करते थे अब उन्होंने धनिकों को प्रेरित कर उनके धन से जनता की सेवा पूर्ववत् करने का क्रम बनाये रखा। उनकी ख्याति अब मंत्री न होते हुए भी पहले से अधिक हो गई। यह देखकर राजा बालीक को आश्चर्य हुआ। वह वेश बदलकर एक दिन भद्रजित के घर पहुँचे। उन्हें श्रद्धालुओं से घिरा देखकर राजा हतप्रभ रह गये। भले ही राजा वेश बदलकर आये थे किन्तु भद्रजित ने उन्हें पहचान कर अभिवादन कर उनका स्वागत किया।

भद्रजित ने विनम्रता से राजा से पुनः कहा राजन- आपने मुझे मंत्री पद की व्याधि से मुक्त करके मेरा उपकार किया है। मैं आपका आजन्म आभारी रहूँगा।

राजा बालीक भद्रजित का मुँह देखते हुए बोला- मंत्रिवर आपके विरुद्ध आये आरोप असत्य सिद्ध हुए, आप सच्चे जन सेवक हैं। मैं अपनी भूल स्वीकार करता हूँ। आप पुनः मंत्री पद सम्भालें।

भद्रजित ने राजा का धन्यवाद किया, किन्तु अब मंत्री पद स्वीकार नहीं किया।

साभार- हितोपदेशक (हिन्दी मासिक)
सार्थक जीवन भाग- ३

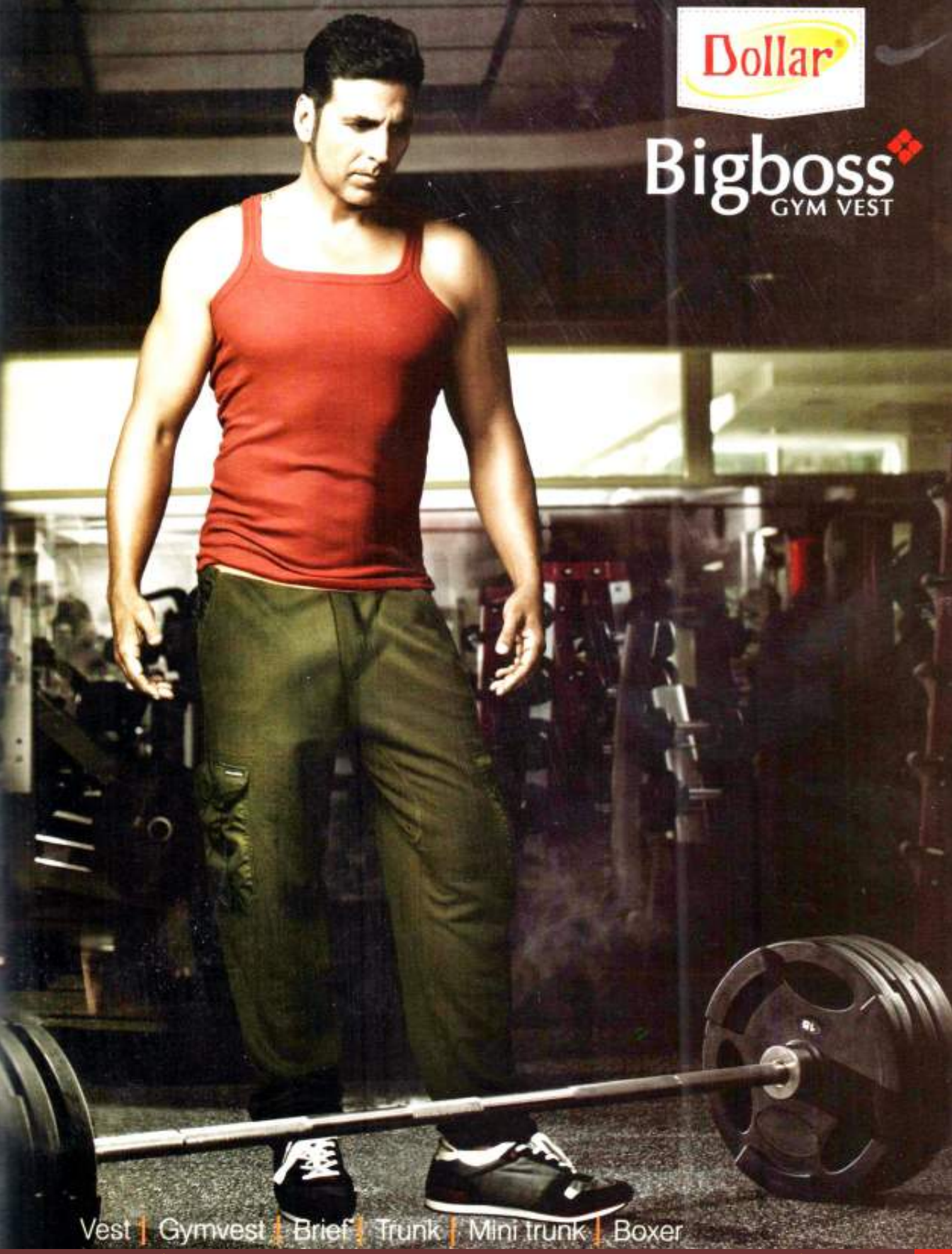
Dollar
Bigboss
GYM VEST
Vest | Gymvest | Brief | Trunk | Mini trunk | Boxer

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 April-2015 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2013-2015

महर्षि दयानन्द सरस्वती

जितना माता से सन्तानों को उपदेश और उपकार पहुँचता है, उतना किसी से नहीं।

सत्यार्थप्रकाश- पृ. २८

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य